॥ कहानी कलाकामँकी ॥

श्रीश्यामलाल चक्रवर्त्ति ने हीन्दी में
प्रकाशकिया ।

मुरशीदाबाद-अजीमगञ्ज

बिश्वविनोद छापाखानामे
छापाभया ।

संबत् १८३५ ।

एक रुपैये ।

मील फी जि

॥ कहानी कलाकामकी ॥

श्रीश्यामलाल चक्रवर्त्ति ने हीन्दी में
प्रकाशकिया ।

99

मुरशीदाबाद-अजीमगञ्ज

विश्वबिनोद छापाखानामे
छापाभया ।

संबत् १९३५ ।
1878

श्रीश्रीपरमेश्वरजी।

उपक्रमणिका।

जगत्नाथ तुं सच्चा करतार है।
के आलम तुझी से नमुदार है॥
किसि से नहो रूप तेरी वयान।
नहीं ईलम तेरा किसि पर अयान॥
जगत मेंहे सवकाम तेराभला।
अचम्वा हुवा सवको इस कामका॥
महरहै तेरा जीव और जानपर।
पशु और पंखी और हैवानपर॥
हर एकशै सदा दरस तेरा कहे।
तेरे ईशकमें नाम तेरा जपे॥
अजव ईशक तुनें पैदा कीया।
केउस ईशक ने सव को शैदाकीया॥
उहि ईशक ईस्युफमेंथा जलवागर।
जिलेखा उसिसे फिरे दर वदर॥

उही ईस्क खुसरु में फरहाद में ।
उही ईसक सिरींकी बुनियादमें ॥
उसि ईसकनें नलको जोगी किया ।
दमन की तलबका विरोगी किया ॥
उसी ईसकमें कीस मजनुं हुवा ।
की लेला पे सेदा उ मफतुं हुवा ॥
मनोहर उसी ईसक से दर बदर ।
हुवा जब मधु मालत आईनजर ॥
एही ईसक जिस दिलमें आकर बसा ।
उसे देखकर सब जमाना हंसा ॥
उसे किन उहि सबका सिर ताजहे ।
जहां में अजब ईस्क का राजहे ।
जो आंखु से ईस्क आब होकर बहा ।
तो दिल आग से और भी जल गया ॥
है वाकफ ईसबात से खास उ आम ।
कलाकाम ईस मसनवी काहे नाम ॥

कहानी कलाकामकी।

है आगाज इसजासे अब दास्तान।
अजाईब गराईब है ईसमें बयान॥

सुनो बात अब इश्क की कामकी।
कुमर कामरुप ओर कलाकामकी॥
उदैपूर गोरखमेंथा राजपत्।
कैथा नाम उसका महाराजपत्॥
ज़े वस माल अमवाल थाबे सुमार।
महल हाय रंगीन उ जरों नगार॥
उह दुनियामें क्याहे जो उसके नथा।
मगर एक फरजन्द रखता नथा॥
उह रहता फीकर मन्द ईस वातसे।
कि मालक् उसे एक फरजन्ददे॥

छय उसके मुसाहव जोथे नेक कामँ ।
केथाछय जहत मे बड़ा उनका नाम ।।
था अवल करम चंद नामे उजीर ।
वहत पुर हुनर आलमो हम दवीर ।।
दोयम था उह मिसरे कवंलरूप नाम ।
महाराजके पास रहता मुदाम ।।
उह था तीसरा पंडिते ग्यानवन्त ।
अचारज कहें नाम उसका महन्त ।।
उह चौथा जो था जोहरी वाहुनर ।
केदर हर जवाहिरका करता नज़र ।।
मुसाहिव मसुवर जो था पांचवा ।
चितर काम करता था उह वेगुमां ।।
कलांवत छटा नाम रसरंग था ।
के हरदम महाराजके संग था ।।
सव अपने हुनर में वहत वेवहा ।
महाराज था उनमे ईनदर वना ।।
महाराज उन सवसे दिलबंद था ।
न उनके न राजाके फरज़न्द था ।।

छजं राजपतको करें वन्दगी।
उले किन तलव सवको फरजन्दकी॥
उसी गमसे राजा जो गमगीन था।
वुलाकर करमचंदको यों कहा॥
केमें ईसजहां में महाराज हुं।
मगर एक वेटाका महताज हुं॥
ईय हे मसलहत अव सुनो कानधर।
लिबास गदाई करुं सर वसर॥
करो राज तुममें करुं ईह जतन।
वरागी वरण सव करुं अपना तन॥
लगाकर भवुत और वड़ाकर ईह कैस।
करूं लेके कनठा अतीतोंका भेस॥
महल से नीकल साफ जोगी वनुं।
नगर देस परदेस फीरता रहुं॥
फीरुं जगमें जैसे फीरें वेनवा।
मगर एक फरजन्द देवे खुदा॥
करमचंद देवानने सुन ईह सुखन।
अदवसे कहा ऐ महाराज मन॥

करो राज तुम मैं करुं एक काम ।
के हो जीसमे खुश शाह आलीमुकाम ॥
बनाऊं बड़ी एक मेहमां सराय ।
के जीसमें मुसाफर हर एक जाके आय ॥
सदा उहां में जाकर भंडारा करुं ।
अन्धेरा घरुं का उजाला करुं ॥
मंगा देउं हर एककी बस्तर बरण ।
कहु उनके खीदमतमें फीर ईह सुखण ॥
केतुम अपने मालिकसे मांगो दुवा ।
महाराज को दिवे बेटा खुदा ॥
दुवा के लीये हाथ हर एक उठाय ।
महाराज साईद के फरजन्द पाय ॥
करम चंदने जब सुनाई ईह पन्द ।
महाराजको भी तब आई पसन्द ॥
कहा फीर इह सामान जलदी बना ।
सलाहे नीकी में हे क्या पूछना ॥
करम चंदनें सब ईह सामांकीया ।
जो आए मुसाफर तो मेहमां कीया ॥

गरीवी मुसाफर वीदेसी तमाम ।
लगी आने उस जाय पर सुवेह साम ॥
लगी मांगने मौलकी सव ईह दुवा ।
के फरज़न्द राजाकी देवे खुदा ॥
भंडारा उ खेरात की सुवेह उ साम ।
कटा साल ईसी नौ सारा तमाम ॥
करम चंदका था एही मुद्दआ ।
के मांगे दुवा मौल के शाही गदा ॥
कमर वान्ध जोस भी पर तईयार हो ।
तो गुल दोस्ता हो जाय गर खार हो ॥
अचानक फकीर एक चरमी लीवास ।
जो आया एकाएक करम चंद पास ॥
करम चंद नें उसकी ताजिम की ।
वहत क़दर कि और तकरीम की ॥
उह दुरवेस कुछ उस्से जव खुस हुवा ।
तो उसदम करम चंदनें ईह कहा ॥
के रोशन दिलुंको ईह मालुम है ।
जो राजा वहत अपने मगमुम है ॥

दयाउसपेंहोती उह पावे चराग़ ।
अन्धेरा घर उसका हो रोशन फराग ॥
करमचंद परजो करमचंद हो ।
तो राजाके और अपने फरजन्द हो ॥
ईहसुन रहम दुरवेश को आगया ।
निकाल अपनी गुदड़ो से एक फल दिया ॥
अजब रंग वुमें उहथा पुर वाहार ।
के कुदरत खुदाईको आतीथी याद ॥
कहा फिर करमचंद देवानसे ।
के जा इह श्रीफल तु राजाको दे ॥
जो उह अपनी राणी को ईह फल खिलाय ।
तो फल नखल मतलबसे उह जलद पाय ॥
गरज़ जाके राजाको उह फल दिया ।
और अहवाल उस फलका सारा कहा ॥
उह मतलव जो राजाका हासल हुवा ।
तोलेकर महलमें उह दाखल हुवा ॥
सुन्दर रुप राणीथि सुन्दर वदन ।
सोलाथा महाराजके मनसे मन ॥

उसीको खुसीसे दीया जाके फल।
कीता उसके खानेसें ठहरे हमल ॥
नहा धोके रांणीनें और कर सिंगार।
उह फल खालिया ताके होवार दार ॥
पीया फीर जो दोनुनें आबे उसाल।
हुवा आवसे कश्रत मक़सद नीहाल ॥
हुई फल कीतासीर ईह पुर महल।
के रांणी की ठहरा उसौ दीन हमल ॥
उह छय ईयार थे जो महाराजके।
वहत बाग़ शादीमें फुले फली ॥
हर एक की हुई ईस्त्री वारदार।
हुवा शाद सब शहर और शहरयार ॥
लगा जबके उसको महीना नवां।
हुवा जाफरांणी रुखे ईरगवां ॥
दहममाह औसदम गया वैश उ कम।
तो पाया कुंवरनें भले दिन जनम ॥
असरसे सबो फलके खुस होगये।
कि उन छयके भी लड़के पैदा हुवे ॥

उन्हे देख हर एक हुवे शाद शाद ।
पे राजाको सबसे खुशीथी जयाद ॥
नीछावर कीया और दीया दान खूब ।
खुशीका हुवा सारा सामान खूब ॥
नकारह डफी चंग बजनें लगा ।
भिर उलझा हुवा जो सुलझनें लगा ॥
उह रक्कास उ मतरब फीरें हरतरफ ।
बजें हर जगें चंग मीरदंग उ डंफ ॥
कुंवरको खुसी होगई घर बघर ।
हुवा जसन से शाद सारा नगर ॥
हुकुम फीर किया योंकि पंडीत भी आय
कुंवरका जनम पतरा मीलकर बनाय
गरज पंडीत आए सभी ज्ञानवन्त ।
कहे देख जीनको एहीहे महन्त ॥
कीया बेद सब पण्डितो नें विचार ।
कुवरकी लगनका क्या फीर सुमार ॥
बनाया जनम पतरा ही शाद शाद ।
कहा श्री महाराज आशीव वाद ।

गुरु ज्ञान मेरे नें एसा कहा।
कि ईह राजवंसी है राजामहा ॥
दिखावे अजब ईसको अईयामरूप।
रखो नाम ईसका कुंवर कामरूप ॥
उसे बारवीं साल है कुछ खतर।
कि उस दिन सितारुं की बद्है नजर।
उसी सालहै उसपें सखती बड़ी।
खसुसन कड़ी एक बढ़ी ही घड़ी ॥
उसी सालमें इह कुंवर कामरूप।
करे आह जोगी विरोगीका रुप ॥
महाराजने जब सुना इह सुखन।
कहे बारवीं साल उसपर कठन ॥
तो सुनतेही इहबात गमगींन हुवा।
फीर उसदम करम चंदने ईं यों कहा ॥
कि पांले भवर में महाराज उसे।
नरखे रखा जैसे है आज जसे ॥
रहें गिरद उसके मुलाज़म सभी।
अकेला कुंवर कोन छोड़े कभी ॥

करमचंद्रने जब ईह तकरीरकी ।
तो सबनें कहा खूब तदबीरकी ॥
उसे जाके तहखाने में फीर रखा ।
कोई जैसे दौलतको रक्खे छिपा ॥
और उनछय मुसाहबकी लड़की जोथे ।
उन्हे भी रखा ला कुंवरकी कन्हे ॥
ददा दाईयां उहा रखे बे सुमार ।
सेवा उनकी लौंडी उबांदी हजार ।
पीलावें उसे दुध उसवाससे ।
करें उह नहरगज जुदा पाससे ॥
सबो रोज योंही गुजरनें लगे ।
खुशी अपनें भवरे में करणें लगे ॥
उसी गंज भवरे में बाजी करें ।
दिल अपनें को बाजीसे राजी करें ।
बरस बारकी उमरेतक कामरूप ।
रहा उहां नदेखे हवा और नधूप ॥
कहा राजानें पांचईं सालमें ।
कीतालीम उसे अब भी आलमकरें ।

कुंमर और ईयार उसके पढ़ने लगे ।
हुनरमें अवी रोज वढ़ने लगे ॥
हुनर राज गीरी का सिखा कुंवर ।
लिया उन सभुनें भी अपना हुनर ।।
हुवा एक देवान दोयम हकीम ।
सोयम होगया जोहरी मूसत कीम ।।
उह चौथाभी पढ़ वेद पंडीत हुवा ।
मसुवर वना पांचवा और छटा ।।
पढ़ा ईलम मुसकी कलांवत हुवा ।
हुनर अपना हरएकनें ले लीया ।।
सव अपने हुनर में हुए चुस्त चुस्त ।
उलेकिन कुंवरसे रहें सव दुरस्त ।।
वरस सातके जो उह लड़के हुवे ।
तो वाहर सुवेहसाम फीरनें लगे ॥
मगांवे सवारीको असप और फील ।
फीरें जोक में योंही फरसंग मील ।।
निकल शहर से जव उह खेलें सिकार ।
फीरें साथ साथ अपनें उह सात ईयार ।।

उसे दसबरस काजब हुवा कुमर ।
तो राजाके दिलमें कुछ आया खतर ॥
करमचंद से यों वह कहनें लगा ।
के रखें इसे पास सुबेह व मसा ॥
कटें जब कुंवर परसे बारह बरस ।
तो बर आवे उसदिन हमारी हवस ॥
उसी शहरमें एक जाए सिकार ।
कनातकी थी उसमें बागो बाहार ॥
रहें उसमें अनवाहकी जानवर ।
कीही एकसे एक बस् खुबतर ॥
कुंवर फौरन जंगल न बनमें फीरे ।
उसी बागमें सैर करतारहे ॥
करमचंदनें सब फरमान शाह ।
बनाई उसी शहरमे सैदगाह ॥
महलमें बनाई अजब सूरतें ।
परी और हुरूंकी सब मूरतें ॥
बनाया वहां एक बुस्तानभी ।
कीया उसमें तइयार ऐवानभी ॥

उहां जानवर छोड़े हर एक रंग ।
गो जन और खरगोश आहु पलंग ॥
कारम चंदनें सब ईह तयार कर ।
महाराजको दी फीर उसको खबर ॥
कुंवरकी महाराज हमराह ले ।
उसी बागमें शाद होकर गये ॥
कुंवर देख उस बागको खुश हुवा ।
ईसी बागमें में रहुंगा कहा ।
कुंवर और ईयार उसके जो उहां रहे ।
तो राजा फीर अपने महलमें रहे ॥
जो कुछ था खतर दीलमें जाता रहा ।
सरन जाम उहां खूब महकम किया ॥
सिपाहि रखे गीरद उसके हजार ।
के ता देवे फीर पहरा लैलो नहार ॥
और अन्दर खवासें कनीजा गुलाम ।
कीया चौकी पहरेका खूब ईनतजाम ॥
महाराजने सब किया ईह जतन ।
न आवे घड़ी ताके सखत और कठिन ॥

विधाता जो कुछ होकरममें वदा ।
उह आखर करमसे नहोवे जुदा ।
हुवा जवकि वारावरस का कुंमर ।
तो उस साएते नहस नें ली खवर ॥
करममें नहस जो लिखेथि घड़ी ।
उह सायत उसी वागमें आ पड़ी ॥
कुंवरनें जोरा वागकी सैर कर ।
किया अपनें दौलत सरामें गुज़र ॥
सुनी जवकि दौन दो पहर होगया ।
कुंवरने इरादा किया खावका ॥
जो था उसके सोनेका जर्‌रीं पलंग ।
जड़ा जीसमें हर एक जवाहेरकासंग ॥
कुंवरके जो छय ईयार उह पासथे ।
खवरदार चौकीमें वैठे रहे ॥
जतन ईह कियाथा केवाहर न जाय ।
पे ईह कौन समझे के सोनें समाय ॥
कुंवरनें जो की नीन्द आरामसे ।
मिला खावमें जा कलाकामसे ॥

कहूं अववयान खावकी वातको।
लिखुमें अजाइव तलस मातको॥

सुनो अव हकिकत विरह की कठीन।
कुंवरका हुवा खावका ईह जतन॥
अजव खाव देखाकि एक वागहे।
गुलो वुल वुलो लालापुर दागहे॥
दरखतूंमे हरनीका वारहे।
नया फूलहे ओर तई यार हे॥
जो कुछ चाहिये वागमें था उहां।
नही उसकि तारीफ हर गोजवयां॥
हुवा था जरी संगका उसमें काम।
वनेथे मकानात आली मुकाम॥
मगर वाग था उह कलाकाम का।
कुंवर कामरूकि दिलारामका॥
कलाकामकी अव हकीकत लिखुं।
सुनाहे जो कुछ मेंने उसको कहुं॥

कलाकामका बाप था काम राज ।
सरन दीपका साहिबे तखत ताज ॥
उहथा अदल ईनसाफमें बे नजोर ।
सखावत सुजायतमें वदर मुनीर ॥
वहत दौलतो मुलुक भी जी सीपाह ।
वहत सौकती माल और ईज्जी जाह ॥
मरुवत हैया लुतफो हुसनी जमाल ।
प्रभुने दीयेथे सब उसको कमाल ॥
उही एक लड़की थी बस् उसके घर ।
उसीसेथा मां बापका खुश जीगर ॥
सिवा उसके कोई न फर जन्दथा ।
कलाकामके वीन न दीलवन्दथा ॥
पलीथी उह एक नाजो नीयामतको साथ ॥
रखाथा सदा उसको उलफतके साथ ॥
जुदा उस्से होती उह एक पल न थी ।
कलाकाम वीन उसको कुछ कलन थी ॥
उह थी पदमनी गुलसाथा सब वदन ।
उसे अवमे लेला कहुंया दमन ॥

तन उस का था साचें में गीयाढला ।
उह तसवीर खुबीथी सीरता व पा ॥
खवासे थी गीरद और उह दरमीयान ।
सीतारुं में हो माह जैसे अयान ॥
खुसी अपने घरमें जह करती मुदाम ।
न था कुछ जसे दीन दुनियासे काम ॥
वयां क्या करुं उसकी मैं दीलवरी ।
खीजल हो जीसै देख हुरो परी ॥
दोरुखसार जुं गुलसकर वारलव ।
उह दन्दां कयामत अबरुन्दां गजव ॥
उह जुलफें सीया मूसकवु एक कमन्द ।
न छोड़े कभी जो के हो उसमें बन्द ॥
निगा तीरी नावक दो अवरु कमान ।
उह पलकें थी खञ्जर उ या थी सतान ॥
दो आंखूं में काजल दीये उह परी ।
उड़ा और भी दील मीसो अबमली ॥
नजर जापड़े उसके गररंग पर ।
तो सीर मारें अस्साक सब संगपर ॥

रुख उस रश्क खुरका अगर देखपाय ।
तो बादल में चांद अपने मुह को छपाय ॥
अजब हाथ मेहन्दी लगी लाल लाल ।
उह मोती पुरोए हुए बाल बाल ॥
उह चलती थी चाल अजब नाजसे ।
के बजते थे घुंघर भी अन्दाज से ॥
खवासे सदा पास उसके रहें ।
कलाकाम राणी उसे सब कहें ॥
जो ईहां खाबदेखा कुंवर कामनें ।
उही खाब देखा कलाकाम नें ।
कलाकाम जब सो गई अपने घर ।
तो आया उसे खाबमें यों नज़र ॥
के ईक बागहे मौसल बागें जनां ।
गुली मेवा हरनो ईसमें अयां ॥
खवासुं को हमराह लेती हुई ।
उसी बागमें शैरकरणें चली ॥
के जीस बागमें उह कुंवर कामथा ।
अचानक गुजारा भी उसका हुवा ॥

कलाकाम उस बागमें आई जब।
के दोनुंको था आलमें खावतब ॥
सवारीमें जीतनें जुलुदार थे।
सब आपसमें कहते खबर दार थे ॥
कुंमरनें ईह गौगा सुना जब उहां।
के रागो कलाकाम आई ईहां ॥
ईह सुन शोर ला दौलमें उस बासमा
कुंवर जाद रखतुंके उझल छीपा ॥
कलाकाम उस बागमें शैरकर।
लबे आब बेठी जौरा हौजपर ॥
खवासें उठीं शैरके ध्यानमें।
लगीं फीरनें खूब हो गुलस्तानमें ॥
ईका एक खड़ी उहां हुई आनकर।
दरखतुं के उझल जहां था कुंबर ॥
जो देखाकोई आदमीहे छीपा।
ताज्जबसे बोली ईहक्या माजरा ॥
नदेखेथी सुरत कभी मरदकी।
मगर बागमें आज देखा ऐसी ॥

अय ईसमरदसे दूर रहना भला ।
न अहवाल कुछ ईसका कहना भला ।
सुनीगर कलाकाम होकर गजब ॥
अभी देवेताजीर ईसकी सवव ॥
हम आपसमें ईसूसे कीनारे रहे ।
लताकामसे सुँ ाल सारा कहें ॥
लताकाम वेटीहै देवानकी ।
मुसाहेव वड़ीहै कलाकामकी ॥
लता और कलाकाम हमराजहै ।
के हरदम उह आपसमें दम साजहै ॥
महलमें गई फीर खवासें कई ।
कुंवरकी हकीकत लतासे कही ॥
लताकाममें ईह सुना जवके हाल ।
हुवा खोफ रांणीका उसकी कमाल ॥
गरज ले खवासुंको आई उहां ।
कुंवरथा दरखतुंके अन्दर जहां ॥
कुंवरकी उह सुरत जो आई नजर ।
लताकाम लट्टू हुई देख कर ॥

रख अंगुली तहीयर से दन्दान में ।
कहा कौनहै ईह गुलस्तानमें ॥
कोई देवहै याकि जीन या परी ।
उ या राजवंसी निमत आदमी ॥
हकीकत सुना अपनी उवे खतर ।
तो रांणीकी रखता नही कुछ खवर ॥
कलाकाम सुन पाय गरतेरा नाम ।
करे काम तेरा उसी दम तमाम ॥
गितावीसे अपनी हकीकत सुना ।
तुझे कौन लाया मुझे दे वता ॥
कहां तेरा घरहै कौसजा मकान ।
तो कौस मुलक से आगयाहै ईहां ॥
लतासे कुंवरने सुना जव ईह हाल ।
हुवा रञ्जो गम उसके दील पर कमाल ॥
कहा देवहुं में न जीवन परी ।
मुसाफर वीदेसीहुं में आदमी ॥
नहै मुझको मालूम हुं में कहां ।
न आगाह हुं कौन लाया ईहां ॥

चीमनमें जो बेठा रहा एक दम।
गुजरताथा क्या क्या न रंजो अलम ॥
सुनी जब हकीकत लताकामनें।
तब आई कलाकामकी सामनें ॥
अदबसे खड़े हो क्या यों बयान।
कि एक बालक है बेगुनां नौ जवां ॥
गरीबो मुसाफेर बीदेसी जो था।
तेरा बाग़में भूलकर आगया ॥
अगर हुकुम हो मुजको सरकारसे।
तो बाहर करूं अपने गुल जारसे ॥
कलाकामनें जब सुनी ईह खबर।
कहा कहरसे उसको लावो ईधर ॥
ईह है कोन ईसबागमें बेहैया।
नलाया मेरा खोफ दीलमें जोरा ॥
सुखनसखत् बोली अभी उसको लाउ।
ईसी वकत जल्लाद को भी बुलाउ ॥
दीखाउ में ग़ेरे चीमनका मजा।
करुं बन्दसें बन्द उसका जुदा ॥

न मारेकि कुदरत कोई उहां पै दम ।
न ताकत के वोले उसे कर करम ॥
खवासें गई सव कुंमरकाम पास ।
कुंवरको कहा चल् कलाकाम पास ॥
सुनाई न हरगज कोई वात उसे ।
उठाया पकड़ हाथ हैं हात से ॥
कुंवरनें भरी आह और यौं कहा ।
कि आई ईह क्या ना गहानीवला ॥
जीरा मुजको ईस वातकी दो जवाव ।
के होताहे क्यौं मुज पे रंजो अजाव ॥
उह कहने लंगी तूंहे राणी कांचोर ।
सोहे हुकुम ईहा उसको लावोवजोर ॥
ईह कह उसको पकड़ और भट सौरकोवाल
दोया भटका और उसपे आया उवाल ॥
कुमर जोसपे करताथा रोकर नजर ।
न लेताथा कोईभी उसकी खवर ॥
वोरादर नमादर न साथी न यार ।
दमै सरदो आंसुचले जारी जार ॥

खवासे पकड़कर कुंवर काम को।
ले आई कलाकामके रुवरू ॥
खड़ालाके जीस दम उसको कीया।
करमका लीखा था बरोबर हुवा ॥
कलाकामका उसने देखा जो रूप।
गीरावे खवर हो कुंवरकाम रूप ॥
कुंवरका कलाकाम भी देख रंग।
हुई शकल आईना हैरतसे दंग ॥
जोथा कसद तनसे करे सीर जुदा।
सो आपी हुई जीसे उसपर फीदा॥
ईरादाथा कुछ और हुवा और कुछ।
कहाथा कुछ उसने कीया और कुछ॥
लगा ईस्कका तीर दोनुको आह।
हुई जुलफ जंजीर दोनुको आह ॥
कलाकाम फीर उठके आई उहां।
कुंवर होके बेखुद गीराथा जहां ॥
कुंवर को कला फीर उठा ले गई।
उह दील दादह था दील रवा लेगई ॥

मेला सन्दल और मुह परक्षीड़का गुलाब ।
सु घाया उसे अम्बरी मुसक नाब ॥
कुंवर उठके रांणीके तई देखकर ।
गीरा होके वेहोश वारे दीगर ॥
गरज़ जब हुवा होशमें एक वईक ।
लगी टक टकी फोर न मारी पलक ॥
कलाकाम देखे कुंवर कामको ।
कुंवरकाम देखे कलाकाम को ॥
नतन मनकी कुछ उनको सुध बुध रही ।
हैया आवरु अक़ल बीलकुल गई ॥
कलाकामनें फोर कहा ईह सुखन ।
केतू कौनहे और कहांहे उतन ॥
कहां मुलुकहे तेराकोसजा मुकाम ।
तेरी ज़ात क्या और क्या तेरा नाम ॥
कुंवरकाम बोलाके सुन ऐ परी ।
हकीकत जरा गोश दीलमे मेरी ॥
पीता राजपत् माता सुन्दर सरुप ।
मेरा नामहैया कुंवर काम रुप ॥

नगर है उदैपुर घरहै उहां ।
प्रभुजाने क्योंकर में आया ईहां ॥
ईह सब सुनके राणी बगल गीरहो ।
लगी कहनें अब कुछ न दील गीर हो ॥
मेरे साथ रह इस महलमें मुदाम ।
पीया कर मए उसलका रोज़ जाम ॥
कुंवर बोला ईह मुलक है कोन सा ।
पता अपनें और बापका भी बता ॥
कुंवर नें सवाल ईस तरह जब कीया ।
जवाब उसको यों फीर कलानें दीया ॥
कलाकाम हुं में सरन दीप राज ।
मेरे बापका नामहै काम राज ॥
कुंवरनें कलानें जो देखा ईह खाब ।
और उसमें कीया यों सवालो जबाब ॥
बनें दोनु उस खाबमें दोस्तदार ।
हुवा बाहम उलफतका कौलोक़रार ॥
कुंवर यानि जावे न फीर अपने घर ।
रहें मीलके उसजापे सामी सहर ॥

क़रार और कौल उनका सादक हुवा।
हर एक उसमें मासूक आशक हुवा ॥
कलानें लीयां मै सें भरजाम को।
दीया एक अदासे कुंवर कामको ॥
कुंवरने खुसीसे पीयाला लीया।
शरावे मुहवत समझ कर पीया ॥
गया भूल मां वापका सव वचन।
वीरह को घड़ी आगई वस कठीन ॥
कलासे हुवा ईशक जोस दम श्रेयान।
लतासे कीया हाल सारा वयान ॥
कहा फीरकें मेंह फल हो आरास्ता।
करें ऐश और ग़महोवरखास्ता ॥
तवा ईफको और मुत रवुं को वुलांय।
केता नाचे और राग गांए वजांय ॥
जीरा शाद हो अपनें महमांकादील।
अलमसे हुवाहै वहत मुज़महल ॥
लतानें ईह ईरशाद जोसदम सुना।
उसीदम सव सामां ला हाजर कीया ॥

खुला फीर तो उहां ऐशअसरतका बाव ।
सुराही उसागर शरावी कवाव ॥
पीयालेपे पियाला चढ़ाने लगे ।
मज़ा उसलका उह उड़ाने लगे ॥
लगा वजने दफ और मीरदंग चंग ।
हुवा खूव सा नाच और राग रंग ॥
उह मुतरव तवा ईफ ईह मुजराकरें ।
कि देवारी दरको भी गोया करें ॥
गज़व हुसन और क़हर उनका अदा ।
जोन उपर उह पोशाको जी.वरव ला ॥
और उस् नाजो नखरे काहो क्या वयान ।
जो ले जावे इन सांको ऐकदममें जान ।
इह चरचा जो उहा होगया एक दम ।
हुवा साफ गुलजार रशक अरम ॥
रहीपर कुंवर की कला पर नजर ।
न देखा कीसी और को आंखभर ॥
कलाकाम हरदम करे राजोनाज ।
कुंवर काम अपना करे दील नीयाज ॥

कुंवरका दील उस जापर जब लगगया ।
उसी औशमें होगई चश्म वाह ॥
तहियरसे हरशै पेकीजो नजर ।
तो देखा उही अपना रहनेंका घर ॥
न उय बाग़ देखा न सामान उह ।
हुवा मीसल आईना हैराण उह ॥
गया ईश्क भूल सब राम राम ।
कलाका लगालेने उठतेही नाम ॥
मिलाथा उसे ख्वावमें गुल वदन ।
हीया खार फूरकतने रंजो महन ॥
गीरेवांनो दामन कीया चाक चाक ।
लगा डालने अपनें आंखुमें खाक ॥
कभी आह भररो दीया ज़ार ज़ार ।
कभी आगया ग़शमें एक चीखमार ॥
कुंवरके जो कुय ईयार चोकीमेंथे ।
उह रो रोकर आपसमें कहनें लगे ॥
कोसी शखसनें ईसपे जादू कीया ।
उया देखकुछ नीन्दमें डर गया ॥

हर एक ईयारनें पुछा अहवाल खाव ।
कुंवरनें नहरगोज् दीया कुछ जवाव ।
खवासें कनीजो गुलाम और सीपाह ।
सव ईस गमसें करणे लगे आह आह ।।
फीर आखर महाराजसे जा कहा ।
कुंवरकि तई आज कुछ हो गया ।।
महाराजनें जव सुनी ईह खवर ।
तो घवराके आया उह खसता जीगर ।।
जो देखे तो वेठाहे वे होश सा ।
गीरा होश खोकर उहमद होश सा ।।
ईह देख उसका अहवाल रोणे लगा ।
दोलो जानकी वाप खोने लगा ।।
कहा रोके अे मेरे नूरे पीसर ।
हमें अपनी अहवाल से कर खवर ।।
तुझे आज सोतेमें क्या होगया ।
ईह किस दरदमें मुव तीलाहोगया ।।
कुंवर को नथी अपने मनकी खवर ।
न कुछ जानकी और तनकी खवर ।।

न उसने सुनातें दीया कुछ जवाब ।
रहागश में इकसां उह खाना खराव ।।
सुन्दर रूप भी सुनके हीवे हवास ।
चली आई जलदीसे बेटेके पास ।।
लगी कहने यों वाल अपनी खसीट ।
दीखाई फलकनें इह कीसमतकी खीट ।।
इह तेरीवला मुझको लग जाय हाय ।
कुंवर तुझको क्या हीगया हाय हाय ॥
कुंवरकी जीगर परजीथा रंजो दरद ।
तो भरताथा हरदम उह एक आह सरद ।।
कहा उससे मां वापनें आंख खोल ।
सुना हाल अपना जीरा मुहसे बोल ॥
नकी उसनें हरगीज़ जीरा चशमवा ।
उसी दरद गम में तड़पता रहा ।।
कीया ईशकने जीसकी दीलमे गुजर ।
उसे कें यींकि हीवे कीसीकी खबर ॥
कहा रीके राजानें लोगुंकी जाउ ।
तबीवोंकी और पंडीतों की बुलाउ ।।

सेवा उनके मुल्लाउसीयानें सभी ।
जो ईह काम्म जानें बुलावो अभी ॥
गरज सबके सब आके हाज़र हुए ।
ईस अहवाल को देख आजज़ हुए ॥
सबुंसे लगा कहनें यों काम राज ।
तुम ईस दरदीगमका करो कुछ ईलाज ॥
जहांतक के थे जनतरी मन तरी ।
तबीब और मुल्लाउ सोयांने सभी ॥
लगे कहनें सब अपनी अपनीसी बात ।
कोई बोला उसपर करो हाज़रात ॥
कोसीने कहा ईसको सौदा हुवा ।
कोई बोल सकतो कोहे ईब तदा ॥
किसीने कहा ईसको तोहे नजर ।
कोई बोला जीन का हुवाहे गुजर ॥
किसीनें कहा ईसको खुशबूसुंघाउ ।
और एक शेख़ सद्दूका बकरा मंगाउ ॥
कीया तीन दीग तक सभुंनें ईलाज ।
नबदला उलेकीन कुछ उसको मीजाज ॥

जो आएथे सीयानें सभी फीर गए
कुंवर और मीतर चंद अकेले रहे ॥
कुंवर का मीतर चंद देवान था।
मदब्बर वड़ा और पूर ग्राण था ॥
मीतरचंद एक तेग़ लाया शिताब।
कुंवरसे कहा दे मुझे तु ज़वाव ॥
जो वीतीहै तुझपर सुना सब मुझे।
और अहवाल अपना बता सब मुझे ॥
मुफसील कर अहवाल सारा बयांन।
नही तो अभीज़ान जावेगी जांन ॥
करूंग हले सीर तेरा तनसे जुदा।
फीर अपनाभी काटूं ईसी दम गला ॥
कुंवर दीलमें समझा न बुलुं अगर।
तो खंज़रसे दोनुं की होगा ज़रर ॥
फीर आखर दीया आह भरयौं जवाब।
के मैं क्या कहुं तुझसे अहवाल खाव ॥
में अपनें मकां में ज़ीरा सोगया।
गुजर मेरा एक मुलक में होगया ॥

और उस जापे एक तोफा बोस्तान था ।
के उसमे अजब खूब सामान था ॥
मेरे पास बेठीथी उहां एक परी ।
दीखा तीथी अपनी उह जल्वा गोरी ॥
उह रहकरज़ोरा मुझसे जब खुल गई ।
मेरी आंख इतनें में तब खुल गई ॥
भीतर बोला ईहथा कहां पर मकां ।
कर ईस बातका ठीक मुझसे बयां ॥
जो नामो नशां उसकामें कुछ सुनुं ।
उह हो चरख परतो फो हाज़र करू ॥
कुंवरनें कहा उसका नामीं पता ।
मुझे ईयाद था परमें भूल अब गया ॥
फकत सुरतें ईयार आखुंमें है ।
नही इयाद उसकी सेवा कोई शै ॥
भीतर बोला अपनी तईं तो संभाल ।
हुवा मुझको ईसबातका अब खयाल
नीकालुं में नामो नीशां उसका यों ।
के दान और खेरात जारी करूं ॥

भण्डारा करूं बीच बाजार में ।
मुसाफीर सभी आवें सरकार में ।।
ग़रज एक बनवाकि महमांसरा ।
उह की शश बहत उसमें करणें लगा ॥
बीदेसी सराईमें जो आ रहे ।
सो खुश हो मीतरचंद उस्से कहे ।।
कहानी कोई तुझको आवे अगर ।
उया जोकर कोई परीका मगर ॥
तोकर आके राजासे उसका बयान ।
मगर मतलब अपना हो उसमें अयान ।।
सुखन सुन कुंवर मुहसे बोले अगर ।
उसीपर नीछांवर करूं मालोजर ।।
मीतरचंद हरएक बीदेसी कोला ।
बठावे कहे सुन कुंवर ईह कथा ।।
कुंवर सुन हर एक परीकी खबर ।
न बोले सुखन और न देखे उधर ।।
मीतरचंदका नीत् एही काम था ।
बीदेसीको हर रोज लाता रहा ।।

कुंवरका था अहवाल हरदीन नवुं ।
तरक्की पे था उसका सौदा जनुं ॥

रही ईह हकीकत कुंवर कामकी ।
सुनांयुं हकीकत कलाकामकी ॥

कलाकाम उठी नीन्दसे जोस घड़ी ।
तो देखा हैं बीस्तर पर अपने पड़ी ॥
खयाल उस महलमें हर एकजाकोया ।
न उह बाग़ देखा न उह दील रूवा ॥
अचम्बा हुवा देख रांणीको आह ।
करे ईयाद जैसे कहानी को आह ॥
ज़बस खाबमें उसका दील शादथा ।
उठी नीन्दसे तब बीरहनें लीया ॥
रही अपनी दील ही में खा पेंचताव ।
कीसीसे न हरगीज़ कहा हाल खाब ॥
लगी रोणें अपना जीगर थामकर ।
न महरमकोई जीसको दे ईह खबर ॥

अलमने कीया ईरगवां रंग ज़रद ।
भरे सांस गरम और की आह सरद ॥
हुवा ईयाद उह रश्क शमशाद जब ।
तो नाशाद देखा दीले शाद तब ॥
कलाकाम रांग्री थी नाज़कवदन ।
कुंवरको बीरहने कीया ईह जतन ।
कलेजेमें एक आग बलने लगी ।
उह बीन तेल ईश्कको से जलनें लगी ॥
उन आंखुसे आंसुका दरिया वहा ।
सदफसे निकाले दुरे बेवहा ॥
जीगर उसका तन्दुर सा हो गया ।
और आंखुमें नासूरसा होगया ॥
वीरहको बड़ोने कीया ईह असर ।
हुवा दरद फुरकत से टुकड़े जीगर ॥
उह मांवाप देख अपनी वेटी काहाल ।
लगे रोणें और खाक लो सीरपे डाल ॥
ईलाजो दवा और तदवीरको ।
उले किन न कुछ उसकी तासीरको ॥

दवा देवें तो दे उह अकसीर फेंक ।
जो कपड़े पहनावें तो दे चीर फेंक ॥
दो नैंनूंसे आंसु चले ज़ार ज़ार ।
गसीना मीला वे कहें वार वार ॥
एही हाल उसका रहा साल भर ।
के मुतलक नथी जानी तनकी खबर ॥
जो दील दरद फ़ुरकत से जल वलगया ।
तो फीर ईयौं कलानें ईरादा कीया ॥
किसीसे करूं हाल में आशकार ।
तो शाईद के मतलव हो मेरा वरार ॥
नगर वीच रांणीके वुत्खाना था ।
कहें जीसको हर दुवार का देहरा ॥
जो था मुरत एक उसमें वड़ा शीउका ।
करे खलक पूजां उसी देवका ॥
कीया ध्यान राणी कलाकामनें ।
कहुं हालमें शीव के सामनें ॥
एही ध्यानकर दीलमें आई उहां ।
हरी दुवाराका देहराथा जहां ॥

उसी देहारामें वीराह मन रहे।
सुमत नाम उसका नगर सब कहे॥
वीराहमन को राणीने अन्दर वुला।
कीया और लुगुं को उहां से वीदा॥
कला और विराहमन एही दो जने।
लगे शीव हर दुवारको पूजनें॥
जो लाई पूजाको उहां रख दीया।
खड़ी होके राणीनें पूजाकीया॥
कहां जोड़कर हरसे फीर ईह सुखन।
के औहर कुंवर से मीलुं कीस जतन॥
कुंवर जो मीले फीर तो मानत करूं।
मीले वीन कुंवर की न ईहां फीर फिरूं॥
वीराह मननें ईह हाल सुनकर कहा।
के राणी वता दे ईह क्या माजरा॥
कहां है तेरा रूप और रंग उह।
कहां शकल उह और कहां अंग उह॥
जोवीति है तुझपर सुना सब तूझे।
ईलाज उसकासें अब वताऊं तूझे॥

जो भेद अपने दीलका तूमुझको सुनाय ।
तो अलबत्ता मकसद तेरा ईह बराय ॥
जोथा खाब देखा कला काम नें ।
कहा बात सब विराह मनके सामनें ॥
कलाकामसे जब सुना ईह सुखन ।
तो कहनें लगा ईसतरह विराहमन ।
मुझे नाम उसको नगरकावता ।
और उस जायका देती सारा पता ॥
जो नामी नौथां उसका में सुन्ने पाऊं ।
तो हो जीस जगे पर उसे जलद लाऊं ॥
कलानें कहा मेंनें नामी नगर ।
सुनाथा वलेकीन नही अब खबर ॥
वही सुरत उसकी मुझे ईयाद हे ।
उसी दीनसे ईस दीलमें वेदादहे ॥
वह गुलसी जो सुरत दीखाई मुझे ।
तो कलवेकली से न आई मुझे ॥
मेरे हाथ से सागरे में लीया ।
मुझे कौल मीलने का उसने दीया ।

रही याद जो देख दील दार में।
हुई आह ईतनें में वेदारमें ॥
मेरी नीन्द मुझपर हुई हे उबाल।
न हमदम हे कोई कहु जीस्से हाल ॥
मगर आज पूछा जो तूनें ईहां।
कीया मैनें ईसवास्ते ईह वयां ॥
सुमतको सुन अहवाल रहम आगया।
लगा कहनें रांणी नतू रञ्ज खा।
ईह क्या सोज़ कीवात तूनें कही।
तेरे हालपर जलगया मेरा जी ॥
हुवा फीरना हर बहरी हरवर मुझे।
मीलावे मगर तेरा वर हर मुझे ॥
वताईहे जो शकल और जो नीशां।
उह मील जायतो उसको लाऊं ईहा ॥
कलानें कहातू कुंमर की जो लाय।
तो फीर मालो ज़रजो तू मांगे सोपाय ॥
ईह कह वालमें कील की दे गीराह।
विराह मननें ली अपनी मतलवकी राह ॥

उसे रांणी देती रही माली ज़र।
कहा उसनें लेऊंगा में आनकर॥
ग़रज़ वह जुदा ही कलाकामसे।
जमीको लगा नापने पांऊं से।
रहा ढूंढ़ता दश्ती वन और दयार।
कही शहर देखा कहीं कोह सार॥
फीरा मुलक् मुलक् और हर देस देस।
बनायाथा उसने फकीरोंका भेस॥
कभी बीन्दरावन और कभी वन गया।
ज़मीका तो गोया वह ग़ज बनगया॥
गया जो गया और कासीमें भी।
गरज़ मुलको शहर उसने देखो सभी॥
वह एक साल तक यों ही फीरता रहा।
वलेकीन न हासील हुवा मुद्दया॥
हुवा आखर उस शहर में भी गुजर।
के जीस शहर में था कुमर और मितर॥
वह शबको सराईमें जो आरहा।
तो दारोग़ा ने उस्से खुशही कहा॥

खूशीसे ईहां बेठ जलपान कर।
रसोईका सीधा दीया आर्मकर ॥
रसोईसे जोस दम उह फारग हुवा।
कुंवर पास उसको मितर ले गया ॥
सुमतको न उहां कोई पहचानता।
कोसीको न उह विरा हमन जानता ॥
कहा उहांको लोगुंने ईहा बेठ जाउ।
कुंवरको नया कोई कीस्सा सुनाउ ॥
उह बोला विरा हमन कहो क्या कहुं।
कथा आदमी था परी का कहुं ॥
मीतर बोला जीस जाहि तेरा उतन्।
सुना कोई उस जायका तू सुखन् ॥
सुमतनें कहा सुन मेरी दास्तान।
सरण द्वीप में है हमारा मकान ॥
और उस मुलुकका शाहहै कामराज।
कि देतेंहै राजीसे उसको खराज ॥
कुंवर उस विराह मनसे दो बोल सुन।
जु बस् रह गया चश्मको खोल सुन।

मितरचंद समझा कुछ उसमें निशान ।
कहा ऐ गुरु और किजे वयान ॥
कहा उसने फीर ईस तरह परकलाम ।
के बेटीहे उसकी कलाकाम नाम ॥
कलाकामका नाम सुनकर कुमर ।
तड़पने लगा दीलसे एक आह भर ॥
कभी हस दीया गाह रोणें लगा ।
कुछ अपनें को अशकुं से धोने लगा ॥
गरज़ जबके आया जीरा होशमें ।
कहा ऐ मीतर चंद कर गोशमें ॥
कलाकाम दील दार हे ला कलाम ।
के जीसने कीया हे मेरा काम खाम ॥
उसीका उही बाप हे कामराज ।
मुझे आगया ईयाद ईह नाम आज ॥
कहा फीर कें हाल औरभी कुछ सुना ।
मेरे जखम दीलपर तू मरहम लगा ॥
दुवा देके उस उकत उह विराह मन ।
लगा कहने फीर ईयों कलाका सुखन ॥

के एक दीन कला सो गई अपने घर।
और आया उसे खावमें ईयों नजर॥
केहे बोस्तां लाएके दोस्तान।
और उसमें कहीं आगया एक जवान॥
कलाकाम पहले खफा हो गई।
जो देखा उसे मुवतेला होगई॥
कीया उसल का उस्से को लो करार।
रही नाच और राग कीं उहां वहार॥
उसे देखकर खावमें खुश हुई।
उठी नीन्दसे तो अलम में फसी॥
उसी दीनसे उसका अजव हाल हे।
के अब जीन्द गो उस पे जंजाल हे॥
नखातीहे कुछ और नसोती हे उह।
शवो रीज फुरकतमें रोती हे उह॥
ईह राज़ अपने दील ही में रखानहां।
कीसीपर न हरगीज कीया ईह अयां॥
मगर देवताकी जो पूंजाकी आई।
तो अपनी हकीकत फीर उनको सुनाई॥

उहां मैंनें जो हाल सब सुन लीया ।
मुझे उसपे कुछ रहम सा आगया ॥
गरज मैं ईह बोलाकि तू ग़म् नकर ।
तेरेवास्ते मैं उठाऊं सफर ॥
मिले उह मुझे तो मैं लाऊं ईहां ।
तेरे साथ उसको मीलाऊं ईहां ॥
उसी दीनसे फीरता रहा जा बजा ।
क़ोसी मुल्क में कुछ न पाया पता ॥
जो कुछ शकल मुझसे कलानें कहीं ।
न देखा कभी आज देखा एहीं ॥
कुमर को कीया फीरतो आशीर्वाद ।
खुशीसे लगा कुदनें शाद शाद ॥
गया बाग़ शादीमें उह फूल फूल ।
गमी बेकली को गया अपनी भूल ॥
बिरह मनके उठतेही डण्डौत की ।
गुरु मेरे बोला तूझे ही अजी ॥
लगा कहने फीर जलद ईहां से चलो ।
कलाकी वतन तक मुझे ले चलो ॥

जो मांगो जरो माल देऊं तूम्हे ।
जौरा राह मकसद दिखाउ हमें ॥
मीतरचंदनें जो ईह वातें सुनी ।
महाराजके आगे जाकर कही ॥
महाराजनें सुन कुंवर का सुखन ।
कहा ईह हुवा दुख जनमका कठीन ॥
खुशी कुछ हुई और गम कुछ हुवा ।
वुला फीर कुंवरको ईह उसनें कहा ॥
के वेटा तो खुश हाल रह अपनें घर ।
सरण दीपको भेजुं तेरी खवर ॥
करूं काम तेरा सरणजाम में ।
लीखुं नामा और भेजुं पेगाम में ॥
सरण दीपका राजा हे काम राज ।
मुझै हे उदैपूरका हुकमी राज ॥
उह देगा खुशीसे कलाकाम को ।
ले आवेगें तेरे दीलारामको ॥
कुमरकाम वोला ईह सुनकर सुखन ।
मुझे हे उदैपूर रहणा कठीन ॥

सफर में जो गमहो तो आरामहै ।
मुझे घरमें रहनेंसे क्या कामहै ॥
महाराज बोले कुमर होश कर ।
नसीहत हमारी जोरा गोशकर ॥
करें जो मना काममें सबकोई ।
तो बेहतर नही उसको करणा कभी ॥
कहा उसनें दीलहै मेरा गमसे बन्द ।
मुझे कीस तरह पन्द हो सूद मन्द ॥
मुझे गर मना अब सफरसे कीया ।
तो फीर हाल तूम देखलेना मेरा ॥
अभी भेजकर एक मुलाजमको पैंठ ।
मगाऊं अफीम और रहुं खाके ऐंठ ॥
उ या डूब जाऊं कीसी चाहमें ।
फीदा जानकर दूं ईसी बाहमें ॥
उया खाकमें सामनें सबके लेट ।
करूं चाक अपना कटारीसे पेट ॥
मेरी जान भारी हुई मुझपे आप ।
न मां मुझको दरकार है और न बाप ॥

अगर मेरे मरणे से तुम शाद हो।
तो फीर शोक सेमना मुझको करो ॥
महाराजनें फीकर और ध्यानसे।
कहा ईयों करमचंद देवानसे ॥
विरहका ईसे रोगहे लादवा।
कलाकाम वोन ईसको हो क्या दवा ॥
चरागे नसीहत को अव गुल करो।
प्रभूकें दयापर तवकल करो ॥
करी और तकरीर अव ईस्से मत।
कहो जाय हमराह लेकर सुमत ॥
रहे साथ ईयार और फोजी सीपाह।
सरण दीपका देखें जातखत गाह ॥
वहत और भी लोग सामल रहें।
कुमरसे खवरदार सवको कहें ॥
कलासे कुंवरकामका विश्राहकर।
फीरें जलद उह शाद हो कर ईधर ॥
ईह कह राजा रोणें लगा जार जार।
गया दीलसे आरामो सवरो करार ॥

गरज दी ईजाजत सफर की उसे।
के ता जा कलाकाम से उह मीले ॥
कुंवर रसम आदाव लाकर वजा।
महाराजसे होके रूखसत चला ॥

जीरा चरख की देखना दौड़ धूप।
के वनताहै जोगीकुमर कामरूप ॥

उह दरवारसे जवकी रूखसुत हुवां।
तो फीर अपने दौलत सरामें गया ॥
लीवास और खिल्लत कीया तनसे दूर।
सीर मालो दौलत कीयातनसे दूर ॥
हुवा जवकी उह जोगकी ध्यानमें।
दीये मुंदरा याकूत के कानमें ॥
कीया उसने रीरीकी आंखुकी लाल।
परेंशाकीये सर वसर सीरकी वाल ॥
वनां चश्म बुल वुलक खीस एक मनका।
ज़वस अश्क खू वीसे उसकी रंगा ॥

लङ्गोट और सैली कीताबे नया।
समन्दरके चमड़े का तसमा कीया॥
कीया खाक पांरेको तद्‌वीर से।
मलाभीर भवुत उसने अकसीरसे॥
परू' में जो ताऊसको दागथा।
उन्हीसे बना ताज सीर पररखा॥
नथा संख और वीनका उसको ध्यान।
के खुद आहनाले से करताथा ज्ञान॥
गलेमें उह मोतीके माला को डाल।
लीया पेशतर मीरगछाला सम्भाल॥
जो मुंगेकी सुमरणको उसने लीया।
कलाका उन्हीं नाम जपने लगा॥
कलाका लीया जोस घड़ी उसने नाम।
तो भर आई राल उनको मुहमें तमाम॥
और आहुंसे जोराल चलने लगी।
तो आतशसी मुहसे नीकलने लगी॥
न धूनीकी हाजतथी हरगोज़ उहां।
के दील जलके हरदम नीकलता धूआं॥

जवाहेर पहनकर उह हर हर कसम ।
लगा कहने हर हर के वदले सनम ॥
सजाया वदनपर जो राजाने जोग ।
तो रोणें लगे देखकर उसको लोग ॥
उह कुच ईयार भी उसके जोगी बने ।
गुरु ईह बना और उह चेले बने ॥
कुंवर ईसतरह जबके जोगीवना ।
महलमें उह फीर मांसे मीलने गया ॥
कीया घरमें जा माको भूककर सीलाम ।
दुवाउसने ईयों दी के होनेक काम ॥
सुन्दरनें कुमरको गलेसे लगा ।
दीया वोसा माथेपर और ईयों कहा ॥
के कैसा सफर और कीया है ईह जोग ।
लीया तूनें केऊं अपने तनपर वोरोग ॥
कोईभो भला राजको छोड़कर ।
चलाहै सफर जो चलातू कुमर ॥
सफरको भला कीसतरह दोड़ धूप ।
उठा वेगा तू ऐ कुमर काम रूप ॥

चला हमसे कैसा तू मुह मोड़कर।
गमो दरद में तूह मे छोड़कर॥
कहा उसने रूखसत हमें कीजीये।
नसीहत से दील कीन गम दीजीये॥
मेरेवास्ते अब करो तुम दुवा।
मीलावे मुझे खैरसे फीर खुदा॥
दुवासे तुम्हारी कलासे मीलुं।
सरण दीपमें मुह आसे मीलुं॥
खता आपकी में नेकीहै कसीर।
करमसे मुझे वखश दीहक्क शीर॥
वलाएं उह ले उसकी रोणे लगी।
तुसद्दक उह वेटे पे होने लगी॥
कहा फीर तूहे मेरा आंखुका नूर।
करूं कीस तरह आंखसे नूर दूर॥
महाराज भी फीर उहां आनकर।
लगे उसको समझाने वारे दीगर॥
वड़ा शहरमें एक गौगा हुवा।
के राजा कुंवर आज जोगी वना॥

दरे कीलासें खलकका अज़दहाम।
अमीरो फकीरो मुसाहिव तमाम॥
सुना जीसने ईह माजरा रोदीया।
कोई दीलसे एक आह भरणे लगा॥
वहत वाप मांनें कहा और सुना।
वलेकीन वह एक अपनी जीद पर रहा॥
घसा सन दल और तन पे टीका दीया।
सुगन नेक कर उसको रूखसुत कीया॥
कुमरको दीया वार वरदार सव।
सफरकी दीया वार वरदार सव॥
दीया डेरे और सामीयानें वहत॥
हवादार तखती मीयानें वहत॥
दीये फीलो असपी सुतर वे सुमार।
वहत पालकी नालकी दी हजार॥
सीपाह और लशकरको हमराह कर।
दीया खूब हरी एक की मालो जर॥
जवाहिर जरो माल दे पूरको।
कीया खालो जरसे उदे पूरको॥

कुमरके जो कुछ ईयार दमे साजथे।
उह मां बापसे जाके रुखसत हुवे ॥
गमोरंज गो उनको दोलपर हुवा।
उलेकोन ईह बेटे को सबने कहा ॥
न लोजो जुदा होने का उस्से नाम।
की होगा नोमक उसका तूम पर हराम ॥
गरज शहरमे एक मातम हुवा।
कुंवरका हर एक खलक परगम हुवा ॥
चला होके रुखसत उह मां बापसे।
उठा दोल पे रंजो अलम आपसे ॥
दोयाथा जो कुछ बापने ता जो तखत।
जवाहेर जरो मालकालाउ रखत ॥
एकाएक उसे आक्रो में दान में।
लुटाया खड़े होके एक आनमें।
कहा फौजो लशकरको अबतूम भी जाउ।
फकोरोंको बाबा नहरगोज सताउ ॥
में लड़नेको जाता कोसोसे नहो।
के हरकार हो मुझको लशकर कहों ॥

कुमर जबके एसा खफा होगया ;
तो रोरोके हरी एक जुदा होगया ॥
रहा एक सुमत और छय ईयार बस् ।
कलाकी हुई सबके दीलमें हवस् ॥
उह आठूंबनें जूं गुलस्तांकी बाव ।
मगरथा कुमर पांचवा ईनत खाव ॥
मगर फोजके उह जो सरदार थे ।
जुदा गोके जाहर में उस्से हुवे ॥
उलेकीन कुंवरका लगाकर पता ।
हर एक उनसे जोगीके पीछे हुवा ।
कुमर से उले दूर रहते मुदाम ।
सफर उनका होता सदा सुबे हसाम ॥

लीखुं अब सफरकी हिकायात को ।
उह राजा करणकी मुलाकातको ॥

उह जोगी जो अपनी उतन से चला ।
तो वन और जंगल में फीरतारहा ॥

ईरादाथा उसको सरण दीपका ।
कलाकाम से उसलका मुद्दया ॥
फोरा दस्तोवन और जङ्गल पाहाड़ ।
उह सहराउकोह और मैं दां उजाड़ ॥
न काटूं सें होता जीरा वह मलूल ।
खुशीमें चला जाता उह फूल फूल ॥
सुमतसे कुंवर बोलता ईह सुखन् ।
कलाकामका अब कहां है उतन् ॥
कलाका फकत जोकर आवे उसे ।
कलाकाम वीन् कुछ न भावे उसे ॥
चला कूच दर कूच उहांसे कुमर ।
गया एक मुद्दत् मे होजलो नगर ॥
उहां राज करताथा राजा करण ।
वही था उहां रोणकी अन्ज मण ॥
उहथा साहेवे लुतफो जुद्दो सखा ।
करम फैज अह सां अतासे भरा ॥
सुनी उसने लोगुंसे जो ईह खवर ।
कीहो जोगी आयाहे रांजा कुमर ॥

ले आया कुमरको उह ताजीम से ।
वहत ईज्जत और खूव तकरीम से ॥
खुशीका वहत उसने सामांकीया ।
कई रोजतक उसको महमां कीया ॥
हुवा महरमे राज राजा करण ।
कहा तेरा जंगल में जाना कठीन ॥
केहि आगे अव ईहांसे दरीयाय शोर ।
दीखा ताहै हरदम नया जोर शोर ॥
उह मौज उसकी तलवारहै आवदार ।
के कट जाय जीस्से दोले कोह सार ॥
एही मसलहत है के फीर जावतूम ।
न अजीयत सफर द्रीलमें कुछ लाव तूम ॥
कुंवरनें कहा उस्से एक आह भर
के तूझको नहीहै वीरादर खवर ॥
समन्दर मेरे दीलमें है ईशक्का ।
मुझे ईस समुन्दर से कव डर हुवा ।
गमे पन्दसे तू ने हरगीज सता ।
सरण दीपका राह मुझकोवता ॥

करण ने जो देखा कुंवरका ईह हाल ।
कहाहै ईशक् का ईसे गम कमाल ॥
मरज है ईसे होजरे का लादवा ।
कलाकामके उसलसे हो शफा ॥
ईह संगल न जावे तो पावे नकल ।
ईसी गममें मरजाय ईहां आज कल ॥
सरण दीपको ईसका जाना भला ।
कलाका अब ईसको देखा ना भला ॥
करणनें कुंवरको दीया फीर जहाज् ।
दीया राहका सब सरणजाम साज् ॥
सुमत और कुंवर और कुय उसके यार ।
जहा जे कलां मे हुवे सब सवार ॥
करण उसके पहुचाने कोभी गया ।
कुंवरसे वहत उज़र उसनें कीया ॥
उह राजा फीराकर जोईजी नयाज ।
कुंवर नें भी हिजलोसे खोला जहाज़ ॥
उह लङ्गर उठा वादवां कर दूरस्त ।
मा आलम हुये काममें अपने चुस्त ॥

उह सारंग वावरची खाने गया।
खलासीनें ले डेंगी उपर उठा॥
कहा सबने ईयौं खैर करणा खुदा।
कुंवर नें कहा ईयों कला कहकला॥
न उह खाने पांणीसे कुछ तंग था।
के वीन खाएभी एक सारंग था।
चले जवती रहमें न लंगर कीया।
मिली उनको हरदम मुवाफिक हवा॥
रखाथा जहाज अपना ततवीर से।
वहत तेज जाताथा उह तीरसे॥
उह संगल के नजदीक जो आगया।
किनाराभी उनको दिखाई दीया॥
सुमतनें कहा देखले ऐ कुंवर।
कालाकामका शहर आया नजर॥
कुंवरनें जोरादूर वीं को उठा।
तमाशा कोई दम उहांका कीया॥
जो आई नज़र सव उहांका दीयार।
मुवारक सिलामत कीया एकवार॥

उह सव ईयार करणे लगे यौं कलाम ।
करेंगें न हरगीज़ वहत ईहां मुकाम ॥
कुंवरका जो गौंना कलासे करें ।
शितावीसे फीर अपनी घरको चले ॥
ज़ वस् दखल देतेथे तत्वीर को ।
न समझेथे हरगीज़ उह तकदीरको ॥
करममें जो ग़मकी थि सायत लीखी ।
सो आकर उह सायत वरोबर हुई ॥

खीखुं वहर कीसमतकी अव औजकी ।
करे कतल जो औजसे फौजको ॥

उसी वातके ध्यानमें थे सभी ।
एकाएक हवा सामनें से उठी ॥
हवाका जो तूफान आनें लगा ।
तो फीर हुआउवान आने लगा ॥
खलासी तो वन्दर से फोरणें लगे ।
कभी चड़के रस्सूंसे गीरणें लगे ॥

जहाज एसा जाता उलट और पलट ।
के जैसे कलावाजी खाताहै नट ।
रहे कीतने दीन ईयौं ही खाना खराव ।
नगमसे खलासी न आरामी खाव ॥
नथा ईखतीयार उसको रीका हजार ।
गया पर उह सांती समन्दर के पार ॥
ईह टक्कर लगी आके एक संग साथ ।
के सवका छुटा उहांसे भीर संग साथ ॥
जहाज एक दममें हुवा पाश पाश ।
हर एक सुमत को वह गये काश काश ॥
हुवा मौजकी फौज से उस कीं जंग ।
कीसीके तई खा गया एक नहंग ॥
गया डूव कोई कोई वह गया ।
कोई चड़के मसतूल पर रहगया ॥
कुंवर और यार और सुमत हो तवाह ।
ईह आठूंरहे एक तखते पे आह ॥
दीलुंपर उनुंकी अजव गम हुवा ।
वलेथे उह शादीकी मातम हुवा ॥

फलककी तरफ देख होवे करार ।
ईह कहने लगी होके उह जार जार ॥
न घरके हुवे नें सफरके हुवे ।
ईधरके हुवे नें उधरके हुवे ॥
कुंवर जब समन्दर में वहता फीरे ।
कलाकामका नाम जपता फीरे ॥
फलकनें दीखाया सितम पर सितम ।
न रखा उन आठूं को फीर एक वहम ॥
समुन्दरकी ढेउ आके एसी लगी ।
कि एक तखती को आठ टूकरे हुई ॥
और एक एक टुकरे पे एक एक रहा ।
जुदाई यार हर एक होकर बहा ॥
हुवे ईयार जीस दम कुंवरसे जुदा ।
कहा सबने रोकर कुंवरका खुदा ॥
ईह सब ईयार नजदीक जबतक रहे ।
कुंवर होको आंखुसे बस् तकरहे ॥
हर एक ईयार आखर नजरसे छीपा ।
गुमतभी कीसी सम्त को वह गया ॥

कुंवरका अजब हाल था उस घड़ी।
कै आफतथी एक उसके सीर पड़ पड़ी॥
कभी रो दीया गाह हंसने लगा।
कभीथाम अपना जीगर ईयीं कहा॥
जो घर वखतनें तखत मुझको दीया।
ईहां भी मुझे एकतखता मीला॥
गमो हो जरे से होके उह वे करार।
अजल रोके जीगम को पड़ता पूकार॥

॥ गजल॥

कहुं क्याकी गम मुझपे क्याक्या हुवा।
जहांजी गलातन दीला क्या हुवा॥
उठी हाय कैसी हवा क्या हुवा।
हुया जीहीतनसे हुवा क्या हुवा॥
बुराई जो तूनें दीखाई फलक।
भला ईसमें तेरा भला क्या हुवा॥
न आती मुझे उमर भर नीन्दकाश।
कै ताले मेरा सोगया क्या हुवा॥

अजब खाबमें बाग आया नजर।
की जीसका ईह कुछ गुल खुला क्या हुआ ॥
कला खूब सूरत दीखाई की आह।
बला में हुवा मुबतीला क्या हुवा ॥
नहो वहर गममें कोई ईयो गरीक।
हुई आशना भी जुदा क्या हुवा ॥
ईह कुछ गमहे तीसपर भी जीता हुंमें।
मेरी मीतो की ऐ खूदा क्या हुवा ॥
दीखाकर वतन मुझको दीलदारका।
जोकी वखत तूनें दगा क्या हुवा ॥
मेरा हाल जुं हाल जीगमहे आह।
वतन यार दीलवर छुटा क्या हुवा ॥

सदा सोज दीलसे उबलता रहा।
उह पाणींमें भी खूब जलता रहा ॥
उसीनो गुजरी कई एक रोज।
बदन आबमें और था दीलमें सोज ॥

न मूनस नगमें खार न ईयार था ।
न जुज् जात वारी मदत्गार था ॥
गरज लहरके धक्के खाता हुवा ।
उह तखता फीर आखर कीनारे लगा ॥
जो उस बहरसे बरमें आया कुंवर ।
तो की हरतफको फीर उसने नजर ॥
ईह देखाके जंगल बीया बानहै ।
न उहां आदमी और न हैवानहै ॥
उह राजा के हाकमथा एक मुलक का ।
सो उस दस्तवनमें अकेला फीरा ॥
सरासर जो पाऊं मे छाले हुए ।
तो खार उन पे तीर और भाले हुए ॥
हुवा वनके काटंसे जखमी वदन ।
उठाई उहां दरदो रंजो महन ॥
न अपना कोई न बीगाना कोई ।
न पाणीं मोले और न दाना कोई ॥
ईह के था फल उस वनको खाकार कुंवर ।
के बस् नखल उलफतका है ईह समर ॥

कुंवरकाम जंगलमें वनमें फीरा।
कलाकामका नाम लेता रहा॥

कहानीमें कीस्सा नीकलताहै और।
करो हालपर रावताकी तो गौर॥

काटी एक मुद्दत उसे ईसतरह।
के जंगलमें उहग्रो फीरें जीसतरह॥
गरज इयौं ही फीरतारहा जो कुंवर।
हुवा एक मेदांमें उसका गुजर॥
जो देखे तो है एक जहां वोस्तान।
तरो ताजह ही देखकर जीसको जान॥
दरेवाग पाया जो उसने खूला।
तो उसवागमें सैर करणें गया॥
जो देखा तो गुलजार है पूर वाहार।
हर ऐक नौ हैं फूल और वरगो वाहार॥
कलाकामका उसल ईयाद आगया।
गमो होजरसे जंहा पे रोणे लगा॥

कुंवरने जोको वसके आहो फगां ।
कई औरतें आग ईं नागहां ॥
ईह कहने लगीं कोन तू मर द है ;
तूझे अपना जोका नही दरद है ॥
ज वस् राज तोरीया काहे अैजवां ।
नही मरदको शकल देखो ईहां ॥
करे रावता राणीं ईस जापे राज ॥
वता हमको आया कहांसे तू आज ॥
कुंवर बोला परदेसहै अपना घर ।
नही मुझको ईस देसको कुछ खवर ॥
न समझे न बूझें कुंवरको पकड़ ।
उहीं गाछसे खूव वान्धा जकड़ ॥
कनीं जोने वान्धा उसे वे कसूर ।
कीया अरज जा रावताके हजूर ॥
के ऐक चोर आया है ईहा वे हया ।
अगर हुकम होवे करें सीर जुदा ।
सुना रावताने के आयाहै मरद ।
गजव से उहीं हो गया रंग जरद ॥

कहा जा ईसो वकत् ला रू वरो ।
मेरे सामनें लाकर टूकड़े करो ॥
मेरे मुलकमें ताके हों ईह खवर ।
न आवे कोई मरद वारे दीगर ॥
वचावे कोसीके तईं गर खुदा ।
करे कतल उसको भला कोन सा ॥
कुंवर पर नजर रावतानें जो को ।
तो कुछ दीलमें उसके मुहवत् हुई ॥
कुंवरनें कहा मेंहुं परदेसका ।
विरोगी कलाकामके भेसका ॥
कलाकामका रावता नाम सुन ।
लगी कहनें ईयों हसके उससे सुखन ॥
कलाकाम रखतोहे मुझसे पीयार ।
मेरे पास आई ईहां चन्दवार ॥
खुशीकर मेरे पास आरामसे ।
मीलाऊं तूझे में कलाकामसे ॥
कुंवर वस कलाकामका सुनके नाम ।
लगा कहने क्या खूवहे ईह कलाम ॥

खुशीसे कुंवर बस उन्हीं बोलकर।
हसा रावता से उह दील खोलकर ।।
कुंवरनें ईह जानाके अब सुख हुवा।
न जाना ईह सुख दुसरा दुख हुवा ।।
कुंवर होके खुश पान खाने लगा ।
खबर अपनें जीकी बतानें लगा ।।
कुंवर से खुशी रावतानें जो की।
सुराही शराब उसके आगे धरी ।।
लगे मैं को पीने उह दुनुं जनें ।
कुंवरनें न समझा के केसीबनें ।।
हुवा खुब दोनुं को फीर उहांनीशा।
के होशो हवास उसका जाता रहा ॥
नीशा होगया जब मए नावका।
कीया कसदराणीं नें फीर खावका ॥
महलसे मगांकर बीछाया पलंग।
कुंवर को कहा खाव करवे दरंग ॥
कुंवर था थका राहका सरबसर।
एकाएक हुवा नीन्दमें बे खबर ।।

लीखुं अब कुंवर कामें अहवाल खाव ।
कला उस पे करती है फीर कीया अताव ॥

लीया खावनें जो कुंवर कामको ।
तो देखा उहां पर कलाकाम को ॥
कुंवर काम था नीन्दमें उस घड़ी ।
कलाकाम उस जा हुई आखड़ी ॥
कुंवर रावता देखि जो वे हजाव ।
तो आवरू चड़ा होंट दां तूंमें टाव ॥
वहत तोश पहले कुंवर परकीया ।
फीर आ रावता कोभी ताना दीया ॥
कुंवरसे कहा तूहे वेशरम मरद ।
न सच्चा सुखनका तूरखता है दरद ॥
तेरे ईश्कमें में तो सहतीं हुं दुख ।
उड़ाताहे ईहां रावता सेतू सुख ॥
हवस झूटा ईकरार मुझसे कीया ।
न ईकरार पर अपनी का ईम रहा ॥

गमी होजरे से में तोहुं ईयीं उदास ।
करे ऐश आ रावता के तू पास ॥
उसी खावमें ईह मलामत जोको ।
कला ईतने अरसे में गाईव हुई ॥
उठा नीन्दसे थर थरा कर कुमर ।
पसीना वदनमें हुवा सर वसर ॥
छपर खटसे नीचे तड़प कर गीरा ।
दो आखूंसे आंसु वहाने लगा ॥
फौगां आही जारी जो की वेधड़क ।
उठी नीन्दसे रावता ऐक वएक ॥
कहा नीन्दमें ऐ कुंवर तू डरा ।
डया तेरे दीलमें खतर आगया ॥
कुंवर सोचा में गर कहुं वार दात ।
के मुझसे कलानें कही है ईह वात ॥
तो शाईद ईह दीलमे कुछ मानेबुरा ।
कुंवर नें कहा रावता में डरा ॥
कहा रावता नें नला कुछ खतर ।
न डर अपनी जीमें तू आरामकर ॥

कुंवरको वीछौनें के उपर लेटा ।
गई अपने वीसतर पर फीर रावता ॥
कलाकामको वात को ईयाद कर ।
अकेला लगारोखें उस जा कुंवर ॥
कीया जवत् उसने वहत आहको ।
के राज़ दील उसका फाएश न हो ॥
हुई जोस घड़ी रावता वे खवर ।
तो वीस्तरसे अपनी उठा फीर कुंवर ॥
महलसेभी जो उसके वाहर गया ।
दरखत तूं के अन्दर उह जाकर गीरा ॥
हुवा ध्यान उसको दीलारामका ।
लगा नाम लेने कलाकाम का ॥
फीगां आहो नाला कीया वे शुमार ।
वन्धा खूव रोणेंका फीर उसके तार ॥
उसी हालमें उसको गश् आगया ।
हवास ओर तावो तवां खो दीया ॥

कुंवर उहां रहा वे खवर होकि सो।
हकीकत चंदर मुख परी कोसुनो॥

चन्दर मुखपरी हुस्न सेथी भरी।
मुकावल नथी उसको कोई परी॥
ईह नकशा ईह सुरत ईह आन्दाजो नाज़।
न था उसके मांमें जोथो चोतर साज़॥
उतन था परीका समुन्दरके पार।
वनाया था उहां उसनें वागो वाहार॥
जह मां वापसे अपनी होकर जुदा।
उसी वाग़में आके रहती सदा॥
मगां उसने परी यों से तखते रवां।
हुई सैरको उह हवा पर रवां॥
चन्दर मुख हर एक मुलकको शैरकर।
एकाएक जो आई उसी वागपर॥
तो वोली जोरा ईहा उतारा करो।
ईहहै वाग कैसा जोरा देखलो॥

कुंवरका न हाल उनको मालुम था।
उसी पास तखत अपना लाकर रखा॥
एकाएक चन्दर मुखने देखा जधर।
पड़ा जोस तरफ था कुंवर वे खबर॥
परी देखकर उसको हेरां हुई।
अजव खूव सुरत हे ईह आदमी॥
कहा उसनें परीयों से ईहां जलद आउ।
ईस आदमको तूम तखत पर ला वेठाउ॥
कुंवर खावमें था परी नें उठा।
दीया तखतपर उसको जलदी वेठा॥
कुंवरको परी तखत पर कर सवार।
उड़ी लेके सातूं समन्दर के पार॥
गई ले जहां पर के था उसका घर।
एकाएक उठा नीन्दसे उह कुंवर॥
जो देखेती हे एक तखते जरीं।
उसी तखते पर हे कुंवर और परी॥
परीको कुंवर देख हेरां रहा।
कुंवर से चन्दर मुखने फीर ईयों कहा॥

के ऐ आदमी देखता है तू क्या ।
न उह दीस्तां है न जह रावता ।
तुझे देखकार में हुई बेकरार ।
के आई हुं सातों समन्दरके पार ॥
ईह है कोह काफ और राकस् फीरे ।
नहरगीज कोई आदमी ईहां रहे ॥
मेरे साथ अब तूझको रहणां हुवा ।
जो कुछ रंजो गमहै जह सहनां हुवा ॥
कुंवर ईह सुखन सुन हुवा वे करार ।
ईह कहने लगा रोके उह जारो जार ॥
परी हो परी है वुरी दीलवरी ।
वुरी ईशक् सेहुं वरी ऐ परी ॥
जो देखा कुंवरका परीने ईहहाल ।
केहै दरदोगम ईसके दील परकमाल ॥
कुंवरको परीनें दीलासा दीया ।
लब और माथे पर उसके बीसा दीया ॥
कुंवर होके लाचार बोला सुखन् ।
कलाकाम बीनमें हुवा बेवतन् ॥

करममें विधाता ईह दूखथा लीखा।
बहाना कलाका बिरहका हुवा॥
कुंवर साथ ईसकी रहा एक साल।
चन्दर मुख कुंवरका न छोड़े खयाल॥
कुंवर को परी साथ अपने रखे।
नज़रसे उह उभ्भल न दम भर करे।
परी साथ रहनें लगा जब कुंवर।
परीकी मंगीतर को पंहुंची खबर॥
चन्दर मुखका दुल्हा परी जाद था।
उसे जा कीसी देवने ईह कहा॥
चन्दर मुखतो लाईहे एक आदमी।
करे हे उह हमराह उसकी खुशी॥
न कुछ फीकर उसको तेरे दमसे हे।
के ईश्क उसका अब ऐक आदम सेहे॥
परीका मंगीतर गजब से भरा।
बोला उसने देवुंको फीर ईयों कहा॥
चन्दर मुख जो लाई कोई मरद को।
तो उससे मेरे दील में एक दरद हो॥

कोसो ढव उड़ा वो उस आदमको तुम ।
मेरे पास ला वो उस आदमको तुम ॥
मेरे मुलक में उसको लावो अगर ।
तो मैं चीर सीना नीकालुं जीगर ॥
परीजाद सवगीरद फीरने लगी ।
कुंवर पर वला वार गीरनेलगी ॥

कुंवर पर ईह आई वला चेवला ।
चन्दर मुखके दुलहा से भो जा मीला ॥

परी जाद सव उसको रखती खवर ।
चन्दर मुखथी ईस वात सेवे खवर ॥
चन्दर मुख गई शैरको एक रोज ।
कुंवर होके तनहा जी करता था सोज ॥
कुंवर उहां अकेला रहा जीस घड़ी ।
तो देखा उनुनें नही अव परी ।
अकेला था घरमें कुंवरकाम रूप ।
जवस देखताथा जमानेका रूप ॥

कहां है कलाकाम कहता पूकार ।
कुंवरकाम रोया वहत जार जार ॥
कुंवरकी परी जाद आवाज सुन ।
लगी कहने ईह तो नयाहे सुखन ॥
उह आदमकी आवाज पहचानकर ।
फीरे गीरद उसकी सभी आनकर ।
कुंवरको पकड़ उह परी जादले ॥
परीकि मंगेतर को देने चले ।
गरज उसको ले जाके हाजर कीया ।
और अहवाल सारा मुफसल कहा ॥
परीजादने सखत होकर गजव ।
कहा सामनें मेरे लावो तो अव ॥
कुंवरको परीजादनें ईयौं कहा ।
तू आदम परी साथ की जं कर रहा ॥
कुंवरनें दीया उसको रोकर जवाव ।
वताऊं में क्या हाल खाना खराव ॥
में वे सुध पड़ा था न थी कुछ खवर ।
उठाकर चंदर मुख ले आई ईधर ॥

गुनेह गार ईसमें हुवां हुं अगर ।
तो जी कुछ तेरे दीलमें आवे सोकर ॥
परीजादकी मां परी गुल सींगार ।
उह बेटे को करतोथी अज बसके पोयार ॥
उह आईथी जो अपने बेटेके पास ।
कीया हालपर जा कुंवर के कयास ॥
कहा उह चन्दर मुख है बद बे हया ।
ईस आदम को नाहक ले आई उठा ॥
उसीकी खता इस अमर मेंहै साफ ।
के आदम न आवे कभी कोह काफ ॥
ईसे मारकर खून नाहक नले ।
पहाड़ूके अन्दर ईसे छोड़दे ॥
उहां देव जीन उसका लुकमां करे ।
ईहां मुफत तु इसको खूंसे बचे ॥
परीजाद इह पन्द सुन खुश हुवा ।
बुला एक जीन को फीर उसने कहा ॥
मेरे पास से जलद लेजा इसे ।
पहाड़ू में राकस को देजाइसे ॥

जहां में न फीर जान इसका रहे ।
चन्दर मुख न फोर ध्यान इसका करे॥
इसे जाके जोन देवुं को देउ तुम ।
तो कील उनसे इसबातका लेव तूम ॥
के उह जोन जुदा जानसे तनकरे ।
पकड़ ईसको एक दममें भोजन करें ॥
कुंवरको पकड़ हाथ सब ले चले ।
पहाड़ूं मे देउंको देने चले ॥
अकेला कुंवर उन् परी जादमें ।
रहा बस् कलाकामके ध्यानमें ॥
कुंवरकाम रूका हुवा जब ईह हाल ।
रहा तोभी दील में कलाका खयाल ॥
गमो रंज दूनीया मेंहे गो हजार ।
उले सब को रखता हे परवर दीगार ॥
परीजाद नें कोह पर आन कर ।
बहत ढूंढा देउंको ईधर उधर ॥
न पाया कहीं जबके उनका पता ।
तो लाचार ईग्रो फीर कुंवर से कहा ॥

की अै आदमी काफही ईह पहाड़ ।
नवस्ती है ईहां वलकी जंगल उजाड़ ॥
समुन्दर उधर देवजीन ईसतरफ ।
वता तूझको हम फेंकें अव कीस तरफ ॥
सीतमहै ईधर और गम्है उधर ।
जोधर तू कहे फेंक दे हम उधर ॥
उह हरगीज न कहने से उनकी डरा ।
कलाकामका नाम ले रो दीया ॥
उह रोया न खोफे परी जाद से ।
कलाकामकी वलके वे दादसे ॥
कुंवर ने कहा तूमको हैं ईखतीयार ।
जोधर चाहो तूम फेंका दो एकवार ॥
परीजादने वसकी होकर गजव ।
समुन्दरकी जानव दीया फेंका तव ॥
कुंवर जव समुन्दर में आकर गीरा ।
तो वस् मौ जीलहरीं में वहता फीरा ॥
परीजाद अपनें मकां फीर गया ।
कुंवरकी डवीनेका कीस्सा कहा ॥

कुंवरको कलाकामका गम रहा ।
समुन्दरमें भी उह मातम रहा ॥
गरज मुत्तसल था कीनार रह उहां ।
कुंवरको समुन्दर में डाला जहां ॥
गमे होजर से उह जो तड़पा कीया ।
तो एक अरसामें जा कीनारा लगा ॥
जो देखे तो एक दस्तमे दान है ।
नहे वान है उहां न ईन सान है ॥
न उह कुछ खबर अपनी तनको रखे ।
वोरोगी कलाके अलमका फीरे ॥
कहाजाके हर एक शजरके तले ।
के मुझको कलाकाम को यों कर मोले ॥

सुनो ईह नई महन तो गम को सेर ।
कुंवरको पकड़ते है अब तसमा पेर ॥
वहत जंगली दस्त वनमें फीरा ।
मोला फीरन संगलका उसको पता ॥

जोवन और मैदान में की उसने सैर।
एकाएक कुंवरको मीला तसमा पैर॥
न उहां जात आदम न आदमका राज।
मगर तसमा पैरका सब राज काज॥
जीसे आदमी कहतें हैं तसमा पैर।
उह ईनसांसे रखता है अज बसकी बैर॥
कुंवरने न समझा न सो थी ईह बात।
के ईह तसमा पैर और में आदमका जात॥
ईह समझा कोई मरद है नेक काम।
अदब से कीया उसको झूक कर सेलाम॥
उह मोजो भी बोला अलेकम सेलाम।
बहत दीन जीवो हक् रखेने क नाम॥
कहांसे तुम आए कहां है मकान॥
जो मतलब तूमाराहै कीजे बयान॥
कुंवर बोला फीर ईसतरह पर सुखन्।
कलाकामका कह कहां है उतन्॥
कहा उसनें तूम बैठ जावो ईहां।
बताउं तूम्हे राह जावो जहां॥

कुंवरने ईह जानाकि सच बात हे।
कहा अपको ईह ईनायात हे॥
कुंवरको करीब अपनी उसने बुला।
कहा गैवसे मुझको घोड़ा मीला॥
बीचारे को ईस मकर से बसपकड़।
लपेट अपनी पैरूंसे बान्धा जकड़॥
कुंवर नें बहत जोर जब उहां कीया।
तो फीर मुहपर उसको तमाचा दीया॥
तमाचे कुंवरको बहत मारकर।
कुंवर पर चड़ा ओर चला अपनी घर।
जो सोवे तो कांधे पे उसको रहे।
उठे तब कुंवरको खड़ा हो कहे॥
उह चड़कर सदा जसपे बनमें फीरा।
थका जब कुंवर तो तमाचा दीया॥
कुंवरका हुवा सीम तन खार खार।
जो पाऊंमें एक खार तनमें हजार॥
कुंवरपर जो चड़कर फीरा उह मुदाम।
उसी जंगली कोह पर सुबेह शाम॥

कुंवरकाम का रंग था लाला जार ।
हुवा मैल से नील गुं सवजह दार ॥
रुखे ईर गवानी हुवा मोसुल तूस् ।
तने सन दली होगया आवनूस् ॥
कुंवर नें उठाई जो कुछ रंजे राह ।
सो है कीसकी ताकत सुनें उसकी आह ॥
सदा तसमा पै रूंकी लेकर फीरे ।
उह वनमें करमका लीखा दुख भरे ।
कुंवर होके घोड़ा रहा एक साल ।
तन नाजक उसका हुवा खसता हाल ॥
मगर एक दीन माजरा ईह हुवा ।
कुंवर लेके वनमें जो उसको गया ॥
तो देखाकि एक वाग है कुदरती ।
लगी उसमें अंगुर सव वे रुती ॥
अजव पुर वाहार उसमें अंगुर है ।
उह अंगुर से नखल मअमूर है ॥
कुंवर ने लीये सारे अंगुर तोड़ ।
धरक उनको मलकर लीया फीर नीचोड़ ।

लगी दो घड़ी उसको सूरजको ताव ।
हुवा उस्से अरक मीसल कातल सराव ॥
कुंवरने फीर उसमें से थोड़ा पीया ।
और उस तसमा पाको भी थोड़ा दीया ॥
नीशेकी जो तासीर उसपर हुई ।
तो उस जोरसे एक आवाज दी ॥
कि सब तसमापैर उस जगे आगये ।
उस आवाजसे सुज तमा उहां हुये ॥
खड़े हो गये बान्धकर सब कतार ।
उलेकोन सभो आदम उपर सवार ॥
कुंवरने सबअंगुरका रस लीया ।
सभी तसमां पैरूंको पीनें दीया ॥
अरकका हुवा कैफ और नीशा जब ।
तो बे होश होकर गीरे सबके सब ॥
सवारी में थे उनके जो आदमी ।
लगे मार ने उनको होकर खुशी ॥
जो मारे पड़े सब उहां तसमा पैर ।
तो हाथ आई बीस्ता न की उनको सैर ॥

तब आए कुंवर पास उह मीलके सब ।
कहा हम छुटे आज तेरो सबब ॥
जो हमसे कहे तू उही हमकरें ।
तेरे हुकम बीन हम न पाऊं धरें ॥
कुंवरनें कहा उनको फीर ईह सुखन ।
के खुश होके तूम जाउ अपनो उतन ॥
कुंवरनें उन्हें जब के रूखसत कीया ।
उह आदम हुवे सब कुंवर से जूदा ॥
रहापर कुंवर पास एक आदमी ।
कहा उसने में घर न जाऊं कभी ॥
कुंवर बोला हे मुलक तेरा कहां ।
तेरा नाम क्या और कहां हे मकां ॥
कहा घर उदेपूर में हे मेरा ।
मीतरचंद नाम अपना ले रो दीया ॥
मेरा राजा था जो कुंवरकाम नाम ।
कलापर फोदाथा उह हर सुबो शाम ॥
मीतरचंदका नाम सुनकर कुंवर ।
गले मील गया और कहा ध्यान कर ॥

कुंवर था जो आशक काला कामका ।
उहहै ईह कुंवर या कोई दूसरा ॥
कुंवर और मीतरचंद दोनुं मीले ।
फीर उस दस्त जंगल में दोनुं चले ॥
रहा जीसतरह रावता की उह घर ।
हकीकत सुनाई उसे सर बसर ॥
परी और परीजादको बात भी ।
जो गुजरी थी उह सब मुफसल कही ॥
मीतरचंदने सुनके ईह रो दीया ।
कहा क्या खुदा नें करममें लीखा ॥

सुनो अब मीतरचंदकी वार दात ।
उह कहताहै गुजरी हुई अपनी वात ॥

मीतरचंद बोला कुंवर कर खयाल ।
जो कुछ मुझ पे गुजरा सुन उसका तू हाल ॥
मै तुझसे जुदा हो की जोस दीन वहा ।
समुन्दरकी लहरूंमे वहतो फीरा ॥

मुझे था न कुछ जानका अपनी गम ।
जुदाई का था तेरे दरदो अलम ॥
मैं पानीसे जोसदम कीनारे लगा ।
उहां भी मुझे ध्यान तेरा रहा ॥
तुझे ढूंढता था बीया बान में ।
हर दस्तोवन और मैदान में ॥
तेरा नाम लेकर पुकारा बहुत ।
मैं पथरको छाती पे मारा बहुत ।
तुजस्सतेरा यस मेरा कामथा ॥
न तुझबीन कुंवर मुझको आराम था ॥
कुंवर एक दीन ईस बीया बान में ।
जो रोया तेरे दरद हो ज् रान में ॥
उहीं शोर सुन देव एसा बड़ा । .
मेरे सामने नागहां आ गया ॥
दराजी की उस कदको पहुचे न पताड़ ।
जह था हु वह जैसे काला हाड़ ॥
एकाएक बग़लमें मुझे ले लीया ।
उठाकर पहाड़ूके अन्दर गया ॥

गया लके मुझको जहां थी सुरंग ।
के था उसके दर पर बड़ा एक संग ॥
गया देव उस कोहमें डाल कर ।
मुझें हरतरहका हुवा उहां खतर ॥
गया को हमें जब कदम तीन चार ।
तो देखा कोहि आदमीवे सुमार ॥
मे उन आदमीसे जो पुछी ईह बात ।
के तूम कोन हो कुछ कहो बार दात ।
कहा उन सभुने के ओवे खबर ।
खबर तुझको ईहां को न होहे मगर ॥
तुझें जीस तरह कोह में ला रखा ।
उसी देवने ईहां हमें लारखा ॥
सरे कोह पर देवहे एक बड़ा ।
के रहता हे ईस जाय पर उह सदा ॥
सहरको वीला नागाह आताहे उह ।
ओर एक आदमी रोज खाताहे उह ॥
मे ईसवातको सुनके बस खुश हुवा ।
कहा दुख मेरे सीरसे अबसब गया ।

कुंवरकी जुदाई का था दुख मुझे।
अगर देव खावे तो हो सुख मुझे॥
उसी कोहमें रातको बार बार।
कुंवरकामरू कहके रोया पुकार॥
गई रातसारी हुवा रोज जब।
तो डरने लगे आदमी उहांके सब॥
हर एक आदमी थर थराने लगा।
होली जांपर आफत उठाने लगा॥
मैं बोलाकि तुम पर पड़ी क्या बला।
कहा देव अभी आके होगा खड़ा॥
बस इतनें में उह देव भी आगया।
कीया संगको उसके मुहसे जुदा॥
उसे देखकर गीर पड़े उह सभी।
बदनमें नकुछ जानबाकी रही॥
पकड़ हाथ मेरा उठा ले गया।
मुझें कोहके दरसे बाहर कीया॥
मैं हसकर जो साथ उसके रहमें चला।
मुझे देखकर उह हसा खिल खिला॥

लगा कहने उह देखकर मुझको शाद ।
के हसताहे तू कोस खोये ना मुराद ॥
अगर अपने जोका नही तूझको डर ।
के खाऊंगा तूझको में ले जाके घर ॥
तब देवको में दीया ईह जवाब ।
के हे जीन्दगी मेरी उपर अज़ाब ॥
कुंवरकामरु साथमें जो रहा ।
ईसी शोर दरीयामें आकर वहा ॥
कुंवरकी न हरगीज मीली कुछ खवर ।
मगर खा गया कोई उसको मगर ॥
जो जीन्दह कुंवर होतो जीना भला ।
नही शरवते मगर पीना भला ॥
कुंवरका गमो होजर हे दुख मुझे ।
तू खाजाय मुझको तो हो सुख मुझे ॥
ईह अहवाल सुन उसको रहम आगया ।
उह खुश होके ईयों मुझसे कहने लगा ॥
के हजरत सुलेमानकी हे कसम ।
कीया मेने ईनसान तूझपर करम ॥

बतावे जहां तू उहां छोड़ दूं।
न मारूं तूझे तेरो जां छोड़ दूं॥
कहा मेने लाया जहां से मुझे।
उसी वनमें ले जाके तू छोड़ दे॥
कुंवरको में उस वनमें ढूंढू मगर।
मोले मुझको उस जा कुछ उसकी खबर॥
गरज मुझको उस दस्तमें ले गया।
और एक वाल तोड़ अपनो सोरका दोया॥
कहा आवे मुशकल जो तुझपर वला।
तो ईह वाल आतशमें देना जला॥
उसी दममें आऊंगा उहां ला कलाम।
करूंगा में एक आनमें तेरा काम॥
सेलाम उसको फोर मेंने झूक कर कोया।
मुझे छोड़कर देव रुखसत हुवा॥
फोर उस वनमें गुजरी वहत दोन मुझे।
में ढूंढा वहत पर न पाया तूझे॥
में उस दस्तवन में जो हरजा फोरा।
तो एक तसमा पेर आके मुझको मोला॥

तेरे हाल जो कुछ उनुंने कीया।
मेरा भी उही हाल उसजाहुवा॥
रहा साल भर तसमापेरूं के पास।
रही तेरी मीलनेकी हर गीज न आस।
जी मारे गये तसमापा सबके सब।
खलासी हुई मुझको तेरी सबब॥
मीतरचंद्नें जब कही वार दात।
तो रीकर कुंवरकाम बोला ईह बात॥
प्रभुनें करममें ईह दुखथा लीखा।
भला सुकर हे तूतो मुझसे मीला॥
मीलाया प्रभुने तूझे जीसतरह।
मीलें और भी यार अब ईसतरह॥

कुंवर और मीतरकी ईहथी वारदात्
कहुं आगे अब ईहांसे पंडीतको वात्॥

कुंवर और मीतर जो उहांसे चले।
तो वेठे कहो उह मोजर कीतले॥

मौजर पर जो तोता था एक सबज पर।
उह आया कुंवर कामकी हाथ पर॥
कुंवर देखकर उसको हैरां हुवा।
कहा आदमी पास है ईह रहा॥
ईसे ईनससे उनस है ईस कादर।
मीले कोयोंकि ईन सानसे जानवर॥
ईह ईस वनमें अपना हुवा जोरफोक।
गुरुनें ईह भेजा है हम पर सफीक॥
हुवा वसके तोतेका ईह माजरा।
कीया उसने पंजुसे डोरा जुदा॥
उह तोता उसी वखत् ईनसां हुवा।
कुंवर देखकर और हैरां हुवा॥
कहा ईह अचम्भा न देखा कभी।
लीया हाथ तोता हुवा आदमी॥
कहा ऐ कुंवर में नही जानवर।
उह पंडीत अचारज का हुं में पीसर॥
कुंवर और मोतर सुनके ईह खूश हुवे।
गरज तीनो वाहम गले उठ मीले॥

उह पखीत लगा कहने फीर ईह सुखन ।
जो तुमने कहीबात अपनी कठीन ॥
तुम्हारी होकायत् सुनी कान धर ।
मेरी वारदात अब सुनो ध्यान कर ॥
जुदा होवहा जो तेरी साथसे ।
न दीनसे खबर और ना रातसे ॥
एकाएक जो आके कीनारे लगा ।
तो उस जायपर एक अजब बागथा ॥
में अन्दर जो उस बोस्तांके गया ।
तो देखाके मे वुंसे हे उह भरा ॥
लगा फोरनें उस बागमें जीसघड़ी ।
तो देखाके हे देवनो एक खड़ी ॥
बड़ी ईतनी थी उहके जूं गम की बात् ।
सीया ईस कदर जेसी फुरकत की रात् ॥
उसे देख में थर थराने लगा ।
तनेजारसे जोंही जानें लगा ॥
उह आई मेरे सामने जूंबला ।
कहा कोन हे हाल अपनी बता ॥

में वीला कीहुं में मुसाफर तवाह ।
करमसे वता दो मुझे शाह राह ॥
ईह सुन हसपड़ी देवनी खील खोला ।
लगी कहने तुझ पर हुई मुवतीला ॥
नडर दीलमें और हो न हरगोज मलुल ।
में आशक हुं तूझपर मुझे कर कवुल ॥
में अव हुस्ने मे कीयों न मगरूर हुं ।
की ईस दहरमें गैरते हूर हुं ॥
कहा मान मेरा में हुं महजवीं ।
मीलेगी न मेरीसो सुरत कहीं ॥
तूझे उमर भर होगा रहना ईहां ।
मेरे पाससे जावेगा तू कहां ॥
मेरे पाजमें वान्ध डोरा दीया ।
मुझे जानवर आदमीसे कीया ॥
उह जव खोले डोरा तो आदम वनुं ।
न खोले तो वैसाही तोता रहुं ॥
वहत दीन उहां होके तोता रहा ।
कभी शकल आदम का होतारहा ॥

न छोड़े मुझे एक दम उह कहीं ।
मुझे पास अपनी उह रखे उहीं ।।
गई एक दीन उह मुझे छोड़कर ।
हुई उसकी जानेकी मुझकुं खबर ॥
जो फुरसत मीली मुझको उहां एक जरा ।
मैं उसवागसे पस् हवा हो गया ॥
मुझे दुसरा जव न कोई मीला ।
लीया मैंने ईस पेड़का आसरा ॥
प्रभुनें मीलाया जो ईहा तेरे साथ ।
तो गोया के पायामैं आवे हैयात् ।।
कुंवर नें कहा मीलके दुतुंकी तईं ।
गुरु फोर मीलावे सव औरूं की तईं ।।
कुंवर साथ दो ईयार मीलकर चले ।
न फोर देव जीन उनको हरगीज मीले ॥
कुंवरसे कहा ईयौं के वन्दे ह नेवाज ।
न कहना कोसो शखश से अपना राज ।।

बयाने करा मात दुरवेश है।
कुंवरसे मुलाकात दुरवेश है॥

खुशी होके तीनुं जी वनमें चले।
उहां उनको खाना न पांखी मिले॥
भटक ते फीरे दस्तमें उह सदा।
एकाएक उन्हे एक गुसांई मीला॥
उसे देख तीनुं लगी भागने।
के फीर दुख दीखाया हमें भागने॥
उह बोला फकीर ईसतरह उनसे बात।
के कीयौं भागते हो तुम आदमकी जात्॥
न ईसबन में ईनसांन का हे गुजर।
कहांसे तुम आए चले हो कीधर॥
न जंगल में भटको मेरे पास आव।
जहां में बताऊं उसी राह जाव॥
कुंवर बोला हम हें मुसाफीर गरीब।
फरेब आह देखकर बुला मत फकीर॥

ईसो मकर से पास अपनी बुलाय।
पकड़ कर हमें फौरतू घोड़ा बनाय॥
उह बोला फकीर ईस तरह पर कलाम।
की बाबा नहीं मकरका ईहां पे दाम॥
कुंवर बोला हाल अपना जाहर करो।
हमें राजसे अपनी माहर करो॥
उह दुरवेश बोलाके हुंमें फकीर।
हुवाहुं ईसो जंगली बनमें पीर॥
फीरामें न बस्ती न शहरी दीयार।
गया पर उदैपूर को एकबार॥
कुंवर बोला उहां के योंकि जाना हुवा।
और उस जानेका कोया बाहाना हुवा॥
कहा राज पतके न फरजन्द थीं।
दील उसका ईसो फीकरमें बन्दथा॥
मुसाफीरको देता था खैराती दान।
हुई दान से शाद सब ईन्सो जान॥
मुझे तब गुरुने श्रीफल दीया।
कहा जाके राजाको ईह फल खीला॥

शुरुजीका कहना वजाया में वस् ।
न थी सेरको उनमें मुझको हवस ॥
उह था दस्त वनका जोकामल समर ।
कीया होगा लड़के पें उसने असर ॥
हुवा होगा दील ईश्कसे उसका चूर ।
फोरा होगा उह दस्त वनमें जरूर ॥
कुंवरने ईह अहवाल सुनसे दीया ।
उसी वक्त पाऊं में उसके गीरा ॥
कहा उसका बेटा उह हुं में कुंवर ।
मेरे हालपर आपकीजे नज़र ॥
लगा ईश्कका मेरे सीनेपे तीर ।
जीगर और दीलको दीया उसने चीर ॥
कालाकामकी खावमें देखकर ।
हुवा ईश्कसे टुकड़े टकड़े जीगर ॥
जो ईस ईश्क से में देवाना हुवा ।
तो फीर अपनो घर से रवाना हुवा ॥
गया दीलसे आरामो सब रो करार ।
जहाजूंमें आखर हुवा में सवार ॥

जहाज आखर अपना हुवा जीतवाह ।
उठाई बहुत सदमा और रंज राह ॥
उठाता रहा गमपे गम दुख पे दुख ।
कोसो जायपर मैंनें पाया न सुख ॥
गरज सुनके दुरवेश ने ईह कहा ।
करममें ईह गमथा प्रभुनें लीखा ॥
मेरेपास अब तुम रहो एक माह ।
दीखाजं मैं फीर तूमको मतलब की राह ॥
कुंवर सुनके ईहवात खुश हो गया ।
खुशीसे उह खीदमत मैं उसकी रहा ॥
बहुत दीन रहा जबके दुरवेश पास ।
हुवा हीजरसे फीर कलाके उदास ॥
कलाकामको सुध्जो उसको लगी ।
ईह खीद मतमें दुरवेशको अरजको ॥
मुझे फीकर रहती है ईह रोजो शब ।
के देखु सरण दीपको जाके अब ॥
उह दुरवेश ईह सुनके जङ्गल गया ।
कुंवरको फीर एक लाके पत्थर दीया ॥

कहा संग पारस ईसीकाहै नाम ।
नीकलता है दुनीयामें खूब ईस्से काम ॥
ईह पारस है संग ईसको रखना सदा ।
तो राकस्का सीर ईस्से करणा जुदा ॥
सीकसता दीवुंको तो राहतहै ईह ।
के जख्म मुंपे संगी जराहत् हे ईह ॥
अगर तुझको मुसकल आजाय काम ।
वया कुछ खजानेका हो थे ह तमाम ॥
तू लोहेपर ईसको लगाना कुंवर ।
ईसीसे मीलेगा तूझे मालोजर ॥
एही कहके दुरवेश ने देदीया ।
कुंवर पाऊं चुम उसका रूखसत हुवा ॥
मीतरचंद पण्डीत हुवे ईसके साथ ।
ईह तीनुं चले करते रांणीकि वात ॥
कोइ आदमी राह में गरमि ले ।
तो राह उस्से संगल की थे पुछते ॥

हकीकत मसुवर चीतर मन्दको ।
लीखुं जीसतरह परकी मेंनेसुनी ॥

चीतर मन्द भी जब उहां से बहा ।
तो आकर उह एक जा कीनारे लगा ॥
कीनारे पे देखा जो ईधर उधर ।
तो गुलजार एक उसको आया नजर ॥
उह उस बागको देखनें जब गया ।
तो फीर ऐक माली उसे उहां मीला ॥
चीतर मन्दसे बोला कह अपनी हाल ।
तू आयाहे ईस बागमें कीस खयाल ॥
कहा में मुसाफीर हुं परदेसका ।
तेरे बाग़को देखने आगया ॥
खुशी होके मालीनें उस्से कहा ।
मेरे बाग़में तू रहाकर सदा ॥
फलुं पर तू ईस बागके रख नजर ।
न खावे कीसी वारको ज़ानवर ॥

दरखतूं से सब जानवरको उड़ा ।
तू बे खटके खट काके खटकां होला ॥
चीतर मन्द उस बाग़में जो रहा ।
तो ग़मसे कुंवरके उह रोया कीया ॥
उह फीरता रहा जा बजा बागमें ।
जलेकीन कुंवर कामके दागमें ॥
जो उस बाग में थे मकां जाबजा ।
चीतरबेठता जाके उहां जाबजा ॥
कीया जन अकानातकी पुर बाहार ।
बनाई बहत उसमें नकशो नीगार ॥
बनाई उहांपर बहत सुरतें ।
हर एक नब हर रंगकी सुरतें ॥
कीया काम उसजा जो कुछ हो सका ।
नमुना कीआ बाग फर दोसका ॥
और जस जायका राजा कनदरबजोथा
उहताबे कलाकामके बापका ॥
गया और क़ ..क दीन बाग़ में ।
के दीलको जीरा जाके उहां खूबकरें ।

जीरा जाके उस बाग़को सैर कर ।
मकानात में की जो जाके नजर ॥
तो देखा केहैं मुरतें जर निगार ।
खड़े हैं एहां सुरतोंकी कतार ॥
ईह नकशा उहां देख हैरां हुवा ।
के ईह काम ईस जा पै कीसने कीया ॥
जुलदार राजानें अपना बुला ।
कहा जा ईसी उकत माली कोला ॥
उह आया जो माली खड़ा होके दूर ।
कहा क्यों कीया याद मुझको हजूर ॥
जोको राजा कनदरप नें उसपर नजर
बुला पास पूछी नई ईह खबर ॥
कीया अरज मालीमें खाजं उसे ।
खबरदार ईस बागमें जो रहे ॥
चीतरको जो मालीनें हाजर कीया ।
तो फीर राजा कनदरप नें उसे कहा ॥
के कीसनें बनाया ईह नकशा नीगार ।
मेरे बागमें ओसनेको ईह बहार ॥

चीतर मन्दनें ईयौं कहा श्रै हजूर ।
मुझीसे हुवा ईस महलमें कसूर ।।
ईह राजानें दो होके खूश काम वांग ।
कें मुझसे मसुवर तू ईन श्राम मांग ।।
कहा मुझको हे कुछ नही अहतीयाज ।
मगर ईहके देखूंमें संगलका राज ।।
उसी देस जाना धरम हे वड़ा ।
कें हे उस जगे श्रीवसा देवता ।।
सरण दीप भेजे महाराज अगर ।
तो हे ईह अता आपकी सरबसर ।।
मसुवरसे कनदरप ने फीर ईह कहा ।
बर आयगा तेरा जोहे मुद्दया ।।
महाराज जीकुं मैं अरजी लीखुं ।
तेरे काममें खूब कोसश् करूं ।।
तुझे पास अपनो रखें कामराज ।
बहत तेरा और उनकाही ईमत राज ।।
उही राजा कनदरपनें ईस ध्यानसे ।
कहा ईयौं खड़ग सेन देवान से ।।

महाराजको एक अरजी लीखो ।
के आदाव तसलीमकुल उसमें हो ॥
मसुवरका भी उसमें हो सारा हाल ।
के ईह आदमी हे बहत वा कमाल ॥
मसुवरहे नक्कासहे खूश नवीस् ।
अमीरोंका अकसर रहाहे अनीस् ॥
वनाताहे हररंग गुल क्यारीयां ।
दीखाताहे हररंग गुल क्यारीयां ॥
हुनर मन्दो आक़ल हे और खूश कलाम ।
नीकी जातहे और हे नेक काम ॥
सो खीदमत में अव ईसको भेजा गया ।
करमकी नजर ईसपे हुवे जीरा ॥
कहाथा जो कुछ उह लीखा जो गया ।
तो राजाने फीर आप उसको पड़ा ॥
लीफाफापे राजानें फीर महर की ।
उह अरजी मुसवरको खुश हो के दी ॥
सफरका सरञजाम भी सव दीया ।
और एक आदमी उसके हमराह कीया ॥

चीतर जबके राजासे रूखसत हुवा ।
सरण दीपको फीर खूशी से चला ।।
कुंवरकी मुलाकातपर थी नजर ।
के शाईद मीले उहां कुंवर की खबर ॥
सफरमें गरज खेंच रक्खी महन ।
फीर आखरको देखा कलाका उतन ।।
जो रस्ताके एक माहमें ते हो सके ।
चीतर एक दीनमे उसे तैकरे ।।
सरण दीपका शहरमें जब गया ।
तो फीर कसद कीलाका उसनें कीया ॥
गरज पहरेवालेनें रोका उसे ।
न जानेको जीन हार छोड़ा उसे ।।
चीतरनें उस अरजीको सरकारमें ।
दीया भेज राजाके दरबारमें ।।
महाराजनें जब उह कागज पड़ा ।
और अहवालसे उसके वाकफ भया ॥
हुवा हुकम फीर चोपदारूंको जाउ ।
मसुवरजो आयाहै जलद उसको लाउ ।।

चीतर जवके खीदमतमें हाजर हुवा ।
अदवसे खड़े होके मुजरा कीया ॥
जो कुछ उस्से पूछाकीया सव वयान ।
कुंवरका मगर राज रखा नीहा ॥
मकां उसके रहनेंको फोर एक दीया ।
महीनाभी उसका मुकर्र् कीया ॥
लीये उस्से राजानें फीर कीतनें काम ।
हुनर और कसव उसका देखा तमाम ॥
महाराज उस्से हुवे शाद शाद ।
ईनायत हररोज करते जीयाद ॥
चीतर जव सरण दीपमें आरहा ।
कुंवरको सदा ढूंढता जावजा ॥
कभी शहर जाना कभी देरको ।
कभी वन् कभी वागके शैरको ॥
न पाया कुंवरका कहीं जवपता ।
तो आखरको वीमार होकर गीरा ॥
ईसी ग़मसे दीलगीर जवहो गया ।
जवस् मीसल तसवीर उह होगया ॥

उसे देख ग़मगीं हुवा कामराज ।
लगा होनें हर रोज उसका ईलाज ॥
हकीमोनें हर तरहका की दवा ।
वलेकीन मरज उसका वड़ता गया ॥
हुवा जो चीतर मन्द वीमार अब ।
हकीम उसकी दरकार है ईयार अब ॥

हकीमें तवेका लीखुं माजरा ।
जो वेटा था मीश्नर कंवल रूपका ॥

कुंवरका कयीं ईयारमें था हकीम ।
कंवल सेन नाम औरथा मुसतकीम ॥
जुदा हो कुंवरसे उह जीसदीन वहा ।
गया भूल सब अपनी हीकमत दवा ॥
कई रोज तक ईयीं रहा उह खराव ।
वहत देखे दरीयाके रञ्जो अजाव ॥
एका एक जहाज एक आया जधर ।
जो देखे तो आदम है एक तखते पर ॥

कंवल ऐनको ले गये फीर जहां।
जहापर उह वोमार था नीम जां॥
कंवलनें पकड़ हाथ देखो जो नवज़।
के होतीथी जां उस वीमारे की कबज़॥
कहो सखत ईसको तो आजार है।
ईलाज ईसका ईसजापे दुशवार है॥
दवाई जो कुछ हो सो लावीं ईहां।
मुझे सब दवाई देखावें ईहां॥
गरज जो दवाईके उसजा पे थीं।
उसी वक़त् सबलाके मोजूद कीं॥
दवा उनमें से जो केथी कामली।
उसे चुनके नुसखेको तरकीव दी॥
कीया जब दवाका खीलाना सुरू।
वदनमें हुवा जो फीर आना सुरू॥
मरज़ से जो उनका वदन था जो सुस्त।
कंवलके दवासे हुवा तन दुरस्त॥
लगा कहने ताजर मेरे खूश नसीव।
मोला गैवसे मुझको एसा तवीव॥

गरज ना खूदा की रहम आगया ।
तो अपना जहाज उसनें लंगर कीया ॥
कई शख्स डेंगीपर होकर सवार ।
उठा लाए उसकि तईं एकबार ॥
कंवल सेननें हाल अपना कहा ।
उसे नाखूदाने दीलासा दीया ॥
कंवलनें जो देखाकि सब उहांके लोग ।
परागीन्दा हैं जैसा होताहै रोग ॥
जो मोसरने पूछा उन्हूसे अहवाल ।
कीया हाल सारा उन्हूने बयान ॥
कि ताजर है एक दरमीयाने जहाज ।
उह रखता है मालो सरञ्जामो साज ॥
उसी काहै फरजन्द एक खूश खूसाल ।
के था उसका आजार सौदा मोसाल ॥
सो पहुंचा लबुं पर है अब उसका दम ।
ईसी बातका सबकि दीलपर है गम ॥
कंवलनें कहा मैं जो देखूं तेरा ।
तो दूं उसको तशखीस कर कुछ दवा ॥

कहा शाद हो उह कंवल से सुखन ।
कहा तुम चले थे कहांके वतन ॥
उहा बोला उदैपूर घर है मेरा ।
सरणदीपको अब सफ़र है मेरा ॥
सनम भी उहां और है देर भी ।
धरम भी उहां और है सेरभी ॥
कंवल से कहा सबने ऐ महरवां ।
हमारा भी क़सदे सफ़र है उहां ॥
हर एक देर उहां का देखावें तुम्हे ।
महाराजसे जो मीलावें तुम्हे ॥
तुम्हारी बदौलत हम गुलामान हैं ।
बहुत आपको हम पे अहसान हैं ॥
कंवल शादी खुश हाल उहां पर रहा ।
जहाज़ उनका हररोज़ सीधा चला ॥
प्रभु नें उन्हे दी मुवाफ़क हवा ।
जहाज उनका जोतीर चलनें लगा ॥
उह नौ दीनमें तैकर समुन्दरका पाट ।
लगी जाके आख़र उह संगलका घाट ॥

दीया छोड़ मसनूल से वादवां ।
कीया घाटपर जा उन्हूनें लगां ॥
हर एक जीनस ताजरने तोफा लीया ।
महाराजके पेश कसजा कीया ॥
जो देखाके राजा है गमगीं मीसाल ।
परे शां खातर है पूज मुजदह हाल ॥
मुसाहिवसे ताजरनें पूछी ईह वात् ।
के राजा पे गमकीहै क्या वार दात्॥
मेरे सामनें हाल कीजे वयान ।
लगे कहने अर कान दौलत अयान ॥
महाराजके एक फरजन्द है
उही एक फरजन्द दील वन्दहै ॥
कालाकाम है नाम कुछ दूख न दरद ।
वदन जरद और लव पेहै आह सरद ॥
न खाती है कुछ और न कहतो है वात ।
न दीन उसको आराम है और न रात ॥
दवा दें तो आजार होवे दो चंद ।
महाराज ईसो गमसे है फीकर मन्द ॥

उह सौदागर ईसतरह कहने लगा ।
मेरी वातको आप सुनीये जीरा ।।
मि लाया हुं परदेसका एक तवीव ।
दवा जानता हे अजीवो गरेव ॥
वड़ा अपनी हीकमतमें हादक हे उह ।
उह हीन्दूधरमकातो सादक हे उह ।।
अगर हुकम देवे उसे काम राज ।
करे जाके राणीका फौर उह ईलाज ॥
महाराज वोले के मीसर को लाव ।
मसुवरको पहले तूम उसको देखाव ।।
चीतर हाथसे उसके आराम पाय ।
कलाकामको तव दवा उह खिलाय ।।
ईह सुन शाद हर एक मुसाहेव हुवा ।
कहा काम वस ईह सुनासव हुवा ।।
कंवल से कहा जाके वस ए तवीव ।
खूला उह जो था वन्द तेरा नसीव ।।
मसुवर उहां एक वीमार हे ।
प्रभुजानें क्या उसकी आजार हे ॥

दवासे तुम्हारी अगर हो शफा ।
तो फीर हरतरह है तुम्हारा भला ॥
के पहुचोगे रांणीके दरवारमें ।
मिलेगा वहत माल सरकार में ॥
कंवल फीर चीतरकी मकांमें गया ।
उह पहचांन उसे एक आंमे लीया ॥
चीतरने भी पहचाना उसको अयां ।
मगर राज लोगुं मे रक्खानहा ॥
कंवलको महाराजने खूब रखा ।
के रोजीना रातव मुकर्र कीया ॥
मकांभी दीया एक चीतरके करीव ।
लगा रहनें तव उस मकांमें तवीव ॥
जो खीलवतके अन्दर ईह दोनुं मिले ।
तो खूब शरवते दीदसे हो रहे ॥
चीतर मन्द वोला मै ढूंढा नगर ।
कहीं कुछ न पाई कुंवरकी खवर ।
चीतर और कंवल सेन मील वार वार ।
कुंवर कामरू कहके रोए पूकार ॥

चौतर और कंवल सेन दोनु रहें ।
मौलिं अब कुंवरकाम दोनु कहें ॥
चौतर मन्द चौत राम ला ईयार से ।
हुवा उसको आराम आजार से ॥
गया जैफ उसका तवानाः हुवा ।
कंवलका दवाका वहाना हुवा ॥
चौतर मन्दको देखकर काम राज ।
लगी कहने रांणीका अब हो ईजाज ॥
चौतर नें ईह दरवार में जा कहा ।
के एसा हकीम और नही दूसरा ॥
कंवलको लोयेलो जो रांणीके घर ।
कलाकामसे जा कहो ईह खवर ॥
के आया हे एक मुलकसे ईह हकीम ।
ईलाजो दवामें हे वहत मुसत कीम ॥
अगर हुकम होवे तो उह आनकर ।
खोलावे दवा दरदको ध्यानकर ॥
कलाकाम वोलोके वेहतर हे लाव ।
महल में हमारी खुशीसे वेठाव ॥

टरी चापे चौक के तई छोड़कर ।
कंवल को महल में वीठायाउधर ॥
कंवलनें जो हाथ अपना अन्दर कीया ।
तो फीर नवज पर अंगुलीको रखा ॥
जो देखे तो रांणीको कुछ दूख न दरद ।
कुंवरके अलमसे हुवा रंग जरद ॥
कंवल फीर कलाकाम पर ध्यान कर ।
चला उहांसे आजार पहचान कर ॥
कहा जाके कोई दवा में वनाऊं ।
कई दीन में तईयार कर उसको लाऊं ॥
मकांमें गया और चीतर से ईह वात ।
कही हे कलाको तो ईह वार दात ॥
न कुछ और रांणीको आंजार हे ।
न रांणी कोसी दूखसे वीमार हे ॥
चीतर मन्द उसको ईह तदवीर दी ।
कुंवरकी वना एक तसवीर दो ॥
भरो उसके अन्दर हर एक नो रंग ।
जोसे देख हो अकल ईनसान दंग ॥

दीखा देवें रांणीको तसवीर उह ।
तो फीर होवे हरगीज नदीलगीर जह ॥
मसुवरनें तव फरद कागजका ली ।
कुंवरकी शबे उसको वस् खेचदी ॥
छजं ईयारकी सूरतें भी लीखें ।
कुंवर वीच और गीरदमें उह रहें ॥
कुंवर को वना उसनें जोगी उदास ।
विठाया सभी यार को गीरद पास ॥
चीतरनें उह कागज कंवलको दीया ।
गया फीर उह रांणीके दौलत सरा ॥
और एक पूश्त पर उसके नुसखालीखा ।
केता भेद उसमें रहे कुछ छीपा ॥
कलानें महलमें वुलाया जसे ।
वदस्तुर सावका विठाया जसे ॥
कंवल वोलामें लायाहुं एक दवा ।
के नुसखाभी हे मेंने उसका लीखा ॥
उह जब नवज़पर हाथ अन्दर रखा ।
तो उह जाल साजीका कागज दीया ॥

कहा ईसको खीलवतमें देखे हजूर ।
छीपा नाहे गेरुं से ईसका जरूर ॥
के ईसमें दवाहे मुजंरव लीखी ।
न तासीर होगी जो जाहर हुई ॥
कलाकामनें जव उह कागज लीया ।
तो ध्यान उसकी तसबीर उपर कीया ॥
जो देखे तो सूरत हे ढोलदारकी ।
कुंवरकी सबीवा और छय ईयारकी ॥
कुंवरको उह सूरतको पहचान कर ।
लतासे ईह वोली ईश्वर ध्यान कर ॥
ईसे देखकर नीन्द में सूख कीया ।
ईसीको जुदा ईने हे दूख दीया ॥
कलानें जीगरपर उह कागज रखा ।
कंवलनें जो मांगा तो फीर यों कहा ॥
रखेगी कलाफरद को मुत्तसल ।
हुवा फरद से उसको अराम दील ॥
हुई मुखलसी ईश्कके दरदसे ।
गया दरद आपना ईसी फरद से ॥

कंवल फीर कलासे जो रूखसत हुवां ।
चीतर मन्दकै पास आदांगया ॥
कहा खूब तूनें वनाईथी फरद ।
के जीस्से कलाका गया सारा दरद ॥
लीखा चाहिये कागज अव दुसरा ।
के जीस दीन सुमतनें सुखन ईह कहा ॥
कुंवरका उह अहवाल मीकले अयां ।
कें जीसदीन कलाका सुनाथा वयान ॥
चीतर ने उह नकसा कीया फीर दुरस्त ।
वनाई कुंवरकी उह तसवीर चुस्त ॥
दीये फूलो गुल उसकै अन्दर हजार ।
अजव तरहका उह हुवा पूर वहार ॥
चीतर से कंवल उह कागज लीया ।
कलाकामको जा छीपाकर दीयां ॥
कलाने जी देखा कुंवरका उह हाल ।
तो आराम दीलपर हुवा फीर कमाल ॥
जो देखे तो है उहां सुमत विराह मन ।
कुंवरको सुनाताहै मेरो सुखन ॥

कलाका हुवा शाद दील और जीगर ।
कंवल की दीया उसमें फीर मालोजर ॥
हुवा फीर जो रूखसत हुहां से हकीम ।
जहा मेरा नुसखा वड़ा मुसतकीम ॥
कहा ईयार नकशा लीखोतीसरा ।
कुंवर अव जहा जूंके उपर चड़ा ॥
मुसवरनें कागज लीखा एक और ।
के दरीयाफत हो जीस्से दरियाका तौर ॥
लीखा राहका सव सरण जामो साज ।
चले वस्के हीजली से खीली जहाज ॥
कंवल हसव मामूल अन्दर गया ।
उह कागज कलाकाम को जा दीया ॥
कलाकामनें ध्यान उसमें कीया ।
कुंवर अव जहाजूंमें चड़कार चला ॥
ईह कागज जो देखा तो जी खूश हुवा ।
दीलो जानका दरदो मरज सव गया ॥
गई जरदी और तन हुवा लाल लाल :
फीर आयागयाथा जो हुसनो जमाल ।

कंवलने उसे गुस्ल सहत दीया।
मुबारक सिलामतका चरचा हुवा॥
महाराजने सुन खूशीकी खबर।
कंवलको दीया खिलयती मालोजर॥
जवा हैरकी खैरात होने लगी।
कंवलकी मुदारात होने लगी॥
खूशी ईह हुई सबके सब छोड़दैर।
कंवलके लगी पूजने आके पैर॥
कलाकाम अब होगई ग्राद ग्राद।
सुमतको मुझे बात आई है ईयाद॥

सुमतका ईहांसे सुनो अब सुखन।
के मीलताहै रांणोसे उह बिराह मन।

सुमत बिरह मन जो के था देहरका।
कुंवरसे जुदा होके जीसदीन बहा॥
रहा उह समुन्दर में होकर खराब।
उठाई बहत उसने रन्जो अजाब॥

जहाज एक उस राहसे जो चला ।
तूफान था उस घड़ी नहवा ॥
किसीनें नजर दूरबींसे जोकी ।
तो देखाकि तखते पे है आदमी ॥
विराह मन को पांनीसे उपर लोया ।
जहाज उनका फोर उहांसे राही हुवा ॥
विराह मनसे कहने लगा ना खूदा ।
कहांका तूहे और कहा था चला ॥
कहा विराह मननें फोर अपना सुखन् ।
के शहरे सरण दीपमें है वतन ॥
कहा ना खूदाने के मेंभी उधर ।
चलाहुं मेरा उसो जाहे घर ॥
खूशीसे तूरह और कुछ गम्नखा ।
के पहुचावेगा सबको उहांपर खूदा ॥
गरज कितनें दीन राहमें जो कटे ।
सरण दीपमें जाके दाखल हुवे ॥
विराह मन नगर में उतरकर गया ।
नगरसे कलाके उह दरपर गया ॥

कलाकामनें जो सुनी ईह खबर ।
के आया सुमत हे उठा कर सफर ॥
महलमें लीया याद होकर बुला ।
कहा कह कहीं मेरा दिलबर मिला ॥
सुमतने कहा में बयां क्या करूं ।
मेरे दिल पे गमहे अयां क्या करूं ॥
गयामें ईहां से कुंवरकाम पास ।
कुंवरको जो देखा तो गमसे उदास ॥
जो कुछ खाव देखाथा तूमने ईहां ।
उही खाव देखाथा उसनें उहां ॥
गरज उह सुरुसे उ ता ईनत् हा ।
कुंवरका जो अहवालथा सो कहा ॥
कहा जव जहाज उसका टूकरा हुवा ।
तो मेंभी वहा और उह भी वहा ॥
मीली फीर न मुझको कुछ उसकी खबर ।
के जीता हेय या मरगयाहे कुंवर ॥
ईह सुन हाल रांणी हुई वे करार ।
लगी रोणे ईस गमसे होवे करार ॥

गरज फीर उही जसको आईद हुवा ।
के पहले सेभी वलकी जाईद हुवा ॥
कहा रोके ऐ मेरे मुशफक सुमत ।
मुझे दरद में नीमजां छोड़मत ॥
तो फीर जा सफर और फीर जावजा ।
मीले तुझको शाईद कुंवर कापता ॥
कुंवर की खबर कुछ सुना तू मुझे ।
कुंवर कामरूका दीखारू मुझे ॥
दीया खरच रहको उसे मालोजर ।
विराह मन जहांसे चला फीर सफर ॥
हर एक मुलक और दस्तो वनमें फीरा ।
कुंवरका पता पूछता जावजा ॥
कालाकी उही दरदी सौदा हुवा ।
फीर जस शहरमें जसका शहरा हुवा ॥
गमो रञ्जसे होके जह वेकरार ।
कुंवर कव मिले ईह कहे वार वार ॥
महाराज आए कालाकाम पास ।
कहा अव हुई कीसलीये तू उदास ॥

मरज का अगर तुझको गलवा हुवा ।
तो फीर खा दवा ताकि होवे शफा ॥
दीया ईसतरह रोके उसनें जवाव ।
करूं हाल कीया अरज तुमसे जुनाव ॥
करेगी दवा मुझ पे तासीर कीया ।
में मरतीहुं अब मेरी ततवीर कीया ॥
जला ईश्‌कसे मेरा दील और जीगर ।
कुंवर को सेवा अवनही कुछ खवर ॥
महाराज नें ईह सुखन ध्यान कर ।
कहा अपने देवानसे आनकर ॥
के सब कासदों को कहो एकवार ।
उह जावें हर एक मुलक और हरदयार ॥
कुंवर नाम जीसका हो लावें ईहां ।
कुंवर जमा होकर सब आवें ईहां ॥
मीले उनको जन नामका जो के मरद ।
ले आवें उह सबको तई फरद फरद ॥
खड़ें होवें सब बांधकर उह कतार ।
फीर आवे कलाकाम भी लेके हार ॥

उह जीसके तईं हार दे कर नजर।
उसी कोमें देऊं ईह लखते जीगर॥
ईह ततबीर उसने भी मनजूरकी।
हर एक मुलक कासद गए फीरसभी॥

हकीकत कुंवरकी करूं आशकार।
मीले जोहरी मांग अब ऊसका ईयार॥

कुंवर जो चला लेके पारसका संग।
तो करता न था राहमें उह दरंग॥
मीला राहमें उनको फीर एक मरद।
के भरता था दीलसे वहत आह सरद॥
ईह कहता था रोरो कुंवर क्या हुवा।
मेरा ईयार दील और जीगर क्या हुवा॥
कुंवर सुनके बोला जीरा सुध मे हो।
कहांके हो तूम हाल अपना कहो॥
कुंवर को खबर में बताऊं तूझे।
कुंवरसे मिले तो मिलाऊं तूझे॥

उह बीलाकी मांगी मेरा नाम है ।
कुंवरसे मिलावो एही काम है ॥
कुंवरनें ईह सुनकर उठाया उसे ।
संभुंने गलेसे लगाया उसे ॥
कही उस्से तीनुंने फीर वार दात् ।
उह बीलाकी अब तूम सुनो मेरी वात् ॥
जुदा हो समुन्दरमें मैं जो वहा ।
तो मुद्दत् में मुझको कीनारा मीला
कीनारे पे थे आदमी मरदो जन् ।
उलेकीन उह थे सबकी सब राह जन् ॥
कहीं रह जनी करकी आयेथे जह ।
जरी दौलती माल लाए थे जह ॥
उन्हे ढूंढती आदमी सब फीरें ।
ईसो खोजमें ताकी रहजन मिले ॥
एकाएक जह सब लोग आए जहां ।
उह रहजन जो थे देख पाए जहां ॥
उह रहजन तो हर एक हवा हो गया ।
मैं जसकैद में सुब तोला हो गया ॥

कचेरी में मुजको गएले सभी ।
के सरदार चोरूं का है वस् एही ।।
मुझे हाक मे वक्त ने फीर बुला ।
कहा अपने हम जोनस सारेवता ॥
कहा में ने तुझको नही कुछ खवर ।
के है दूर ईस मुलकसे मेरा घर ।।
मेरा नाम मांगो कहें जो हरो ।
जवा हिरकी करताथा सौदागरी ।।
जहाज अपना जो होगया है तवाह ।
तो ईस मुलक में वहके आया हुं आह ॥
जवाहेर उसी वकत जसने मगां ।
मुझे हरकसमको जवाहर दीखा ।।
जवाहिरको मेंने जो देखा जोरा ।
तो कीमत वताई हर एक की जूदा ॥
ईह देख उसने की महर की कुछ नजर ।
जसी दीनसे मुझको रखा अपने घर ।।
उसी दीनसे हाकमके घरमें रहा ।
एही हाल मांगो ने अपना कहा ।।

कुंवरने कहा अब मिले चार ईयार ।
सरण दीपको चलके देखें दयार ॥
कुंवर ने बनाया अतीतोंका भेस ।
बदन में भबूत और सीर में उह कैस ॥
जहां रात होवे ईह चारों रहें ।
कलाकी सुखन बीन नचारीं कहें ॥

सुनाऊं अब ईस जासे ऊह माजरा ।
कि जीसमें कलावत कुंवर से मिला ॥

चले उह बना ईयों फकीरू का भेस ।
मिला राहमें उनको फीर और देस ॥
उसी देस में जा उतारा कीया ।
उहां जाके आराम उसने लीया ॥
उसी देस मी राज करपत का था ।
मरू वतमें उसके न था दूसरा ॥
ईह दी अरज बिगीने उसको खबर ।
के ठहरे हें जोगी ईहां आनकर ॥

कीया हुकम उन्सब अतीतीको लावे ।
खूशीसे वीठा उनको खाना खीलाव ॥
कुंवरको वुलालाया एक चोपदार ।
चले मिलके राजाके घर चार ईयार ॥
महल में खूशी हो विठाया उन्हें ।
और अकसाम खाना खीलाया उन्हे ॥
कुंवर जवके खाने से फारग हुवा ।
लीया पास राजानें अपनें वुला ॥
हुवा हुकम आवें कलांवत सभी ।
ईहां आके जह राग गावें अभी ॥
वजा फीर तो दफ और मींरदंगो ताल ।
लगे गाने टप्पाउ धुरपद खयाल ॥
रहा दो पहर राग और रंग सव ।
अतीत और करपत रहे संग सव ॥
जो मुतरव वड़ा सवमें एकथा ।
कुंवर नें वुलाकर उसे ईह कहा ॥
के राजासे जव फुरसते वकत पाव ।
तव आकर मुझे राग अपना सुनाव ॥

कलावत ईह सुनकर उहां जब गया ।
महाराज अपनी सभा जब गया ॥
कलावत नें कामल उसे जानकर ।
अतीतों को मुजरा कीया आनकर ॥
कुंवरनें कलावतका उह राग सुन ।
मीतरचंद से बस कहा ईह सुखन ॥
ईह रस रंग सा रागगाता है कुछ ।
ता आजब मुझे उस पे आताहै कुछ ॥
कलावत से पूछो फीर आखर ईह बात ।
वतन् है कहां तेरा और क्या है जात् ॥
कहा उसने बेटा हुं रस रंग का ।
कुंवरका कलावत्त हुं मैं संग का ॥
कीया तुमने भी जा बजाहै सफर ।
कहींगर सुनी हो कुंवर की खबर ॥
कुंवर रोया और रोके फीर हस दीया ।
हर एक ईयार खूश होके उस्से मीला ॥
लगे माजरा उस्से कहने सभी ।
उह बोला सुनो मेरा खट राग भी ॥

हुई मेरी ईह गत जी जहांसे वहा।
के सुर आह नालेका मेने भरा॥
उह दे लहर ताल और मै गाऊं खयाल।
पर उस तालमें तेरा लाऊं खयाल॥
एका एक जहाज एक आया उधर।
उठाया मुझे टीलमें कुछ रहम कर॥
मुझे वस उठा ते ही तुफां उठा।
चलीतेज एक सामने से हवा॥
कहा ना खूदाने के ईह कीया सवव।
ईस आदम के वाईस ईह आया गजव॥
लगा कहने उह ना खूदा ईह सुखन।
के तू कौन हे और कहांहे वतन॥
गरज में ने सवहाल अपना कहा।
उह वोला के हे ईस पे कहरे खूदा॥
न ईस मरद को था उठाना भला।
समुन्दर में ईसको वहा ना भला॥
ईह सुनकर वहत मेंने गोगा कीया।
में पाऊं मे हर एक के जागीरा॥

मुझे सबने मारा तो में री दीया।
गीरा जस समुन्दर में मुझको दीया॥
गरज दो पहर तक वहा में जहां।
फीर आखर गया था कीनारा जहां
जो देखा तो जहां शेर था एक बड़ा।
पकड़ने को था मुस तरह ग्रह खड़ा।
में समझान ही अबतो वचने काटंग।
ईधर ईह समुन्दर ऊधर वह पलङ्ग॥
फीर आकर समुन्दर में उलटा गीरा।
उसी मोज लहरूं में वहता फीरा॥
कीनारे लगा उहांसे फीर आनकर।
चलाराह मेंदांन पहचान कर॥
अकेला में ऊस कोह में जो चला।
न फीर आदमी कोई मुझको मीला॥
गया दीन हुई जबकि उस वनमें ग्राम।
तो जो गमसे होने लगा फीर तमाम॥
हसा में कभी और कभी री दीया।
कभीजी संभाला कभी खो दीया॥

मीला फीर मुझे एक दरखते चीनार।
हुवा जाके मैं जस शोजर पर सवार॥
न आदम जहां था न था जानवर।
मैं रोया कीया मुहसे कहकर कुंवर॥
शजर पर हुई जो घड़ी तीन चार।
फीर आया जहां ना घहां एक सवार॥
दीया छोड़ घोड़े की जेरे शोजर।
चड़ा फीर जह जस नुखलकी शाखपर॥
मैं उस आदमीपर वहत वहम कर।
डरा कुछ न वीला रहा सहम कर॥
नजर जव पड़ी जसको मुझपर जीरा।
ती कहनें लगा कीया है ईह माजरा॥
जवानें ईह जानाकि रहजन है ईह।
मगर जानका मेरे दुशमन है ईह॥
वरागोश ए दील पर आया गुमां।
उठाया मेरे रूखपे तीरी कमां॥
मैं चीलाकि वस राग गाने लगा।
जषां भी जोरा मुसकराने लगा॥

जैसो शाखपर रातको वार वार ।
डर जस मरद से राग गाया पूकार ।।
जो गाऊं तो होता रहे खूश जमीर ।
न गाऊं तो बोलेकी मारा में तीर ॥
करे जह शजर पर टोल अपना नोहाल ।
मुझे राग में सो तरहका खयाल ।।
हुवा रोज तव सव पोयादा सवार ।
हुवे जमा जस जाएपर वे शूमार ।।
हर एक ईनत्‌जार उसका था देखता ।
जवां जसको ऊपरसे नीचे गया ।।
मुझे भी चला जहांसे हमराह ले ।
श्रो ईस् शहर जहांसे रवाना हुवे ।।
जवांका हुवा पीछे मालुम हाल ।
के जह राजाकरपत था फरखून्दा हाल ।।
मकांमें जह करपत जो लाया मुझे ।
प्रभुनें ईहां फीर मोलाया तूझे ।।
कलावतका अहवाल सवनें सुना ।
हुवा गम् मगर फीर हर एक खूश हुवा ॥

कलावत मिला अब हुए पांच ईयार।
कुंवर ने कहा अब चलो हर दुवार॥
सरण द्वीप देखूं कलाका नगर।
नगर जाके जहां खूश हो अपना जीगर॥
कुंवर वनके वैरागके ठाठ में।
गया आठ दीन में पहुच घाट में॥
गया जब सरण दीपके दुवार पर।
मीला फीर विराह मन सुमत आनकर॥
नजर आई जो जान पहचान से।
सुमत ने कहा देखकर ध्यान से॥
कहांसे तूम आए कहां तूम रहो।
उया तूम कुंवर कामरू हो कहो।
कुंवर जो पहचाना वहमन का रूप।
कहा में उही हुं कुंवर काम रूप॥
कुंवर विराह मनसे ईह बोला सुखन।
कहो अब कलासे मीलुं कीस जतन॥
सुमत बोला हम तुम चलें साथ सब।
रहे मठमें हर दुवार के रात अब॥

महल जहांसे राणीका नजदीग है ।
पहर भरमें होतो है जह राह ते ॥
सहर को महल में कलाकि में जाऊं ।
खबरतेरा रांणीको जाकर सुनाऊं ॥
विराह मनकी ईहबात सुनकर चले ।
रहे जाकि हरदूवार की मठ तले ॥
चीतर और कुंवर सेन आएथे जहां ।
कुंवर भी उन्हें मील गया ना गहां ॥
कुंवर को भी दोनुं नें पहचान कर ।
क़दमपर उहीं गीर पड़े आनकर ॥
कुंवर नें गलेसे लगाया उन्हें ।
वठा हाल सारा सुनाया उन्हें ॥
कहा फीर हुई अपनी तो वार दात ।
कलाकाम को अब कही कोई बात ॥
उन्हू नें उह अहवाल सारा कहा ।
के ईस तोर कागज दीये उसको जा ॥
फक़त राजा पे राज़ ईतना खूला ।
के रांणी कुंवर पर हुई है फीदा ॥

ईह हरगीज कीसीको नही है खवर ।
के है कोन से मुल्क का जह कुंवर ।।
दीया हुक्म राजानें ईयों घर वघर ।
के आवें हर एक मुलक के सव कुंवर ।।
एही सुनके आए हैं लाखूं जवां ।
कुंवर नाम लेते हैं अपना अयां ।।
हुवा हुकम राजाका ईयों वेखलल् ।
के वाहर कला आवे ले हार गुल ।।
कला हाथ सें अपनी दे जीसको हार ।
उड़ावे उही हुस्न की फीर वहार ॥
उही उसका दूलहा वने ला कलाम ।
ईसीका वर आवे ईह मकसद तमाम ।।
कुंवर वोला समझो जीरा ईस घड़ी ।
ईह मुशकल वड़ी आके सीर पर पड़ी ॥
हुई फीकर सो हार से और गम ।
वदो ईहां न दीखलाय अपना करम ॥
उह जीती नही जो न दे खोल हार ।
उह दे कर कीसी को न दे कील हार ॥

कीसो ढब अभी ही कला को खबर ।
उह ठहराय ततवीर कोई मगर ॥
लगा कहनें पंडीत में तोता बनुं ।
कला पास जा हाल सारा कहुं ॥
कुंवर काम ईह अवती तीता बनें ।
कहै जाके अहवाल रांणी कन्हे ॥
कुंवर नें कहा मुझको जाना नहीं ।
कलाको अभी मुह दीखाना नहीं ॥
मगर जाके पंडीत करे ईह खबर ।
कुंवरकाम आया हे तेरे नगर ॥
करे औरबोहाल सारा बयां ।
जो राजि नहां हे करे जह अयां ॥
जह डोरा जो पंडोत ने सीर पर लोया ।
जसी वखत आदम से तोता बनां ॥
महल में उह तोता गया जीस घड़ो ।
तो देखाके रांणी कला हे खड़ी ॥
जबस देख रांणी को तोता जतर ।
गया फीर कलाकामके हाथ पर ॥

मीला उसकी तोता तो खुश हो गई।
उसे लेके अपने महल को गई॥
जुदा जबकि तोताने डोरा कोया।
तो फीर जानवर से उह आदम्बना॥
कलाकाम हैरत से बोली सुखन।
के तोता हुवा आदमी कोस जतन॥
ईह घबराके बोलीवता अपना ईसम।
दीखाया मुझेतूने केयौं ईह तलसम॥
गजब खौफ से कांपने उह लगी।
कपर खट में जाति हो ओझोगोरी॥
ईहको अरज पंडीत नें बस हाथ जोड़।
के रांणी खफा होके मुह को न मोड़॥
न डर अपने जीमें न उस वास ला।
जीरा बेठकर सुन मेरा माजरा॥
जो मोसरनें दीखी तूझे मुरतें।
कुंवर और कछ ईयार की सुर तें॥
उह तसवीर तो देख ले आशकार।
कि पण्डीत कुंवरकाम का हुं में ईयार॥

कलाकाम नें सुन कुंवरकी खबर।
जो को जाके तसवीर ऊपर नजर॥
खूशी होके तसवीर पर ध्यानकर।
जह पखडोत की सुरत को पहचान कर॥
सुना हाल ईयारी जफादार का।
बता माजरा मेरे दीलदार का॥
कहो मेरा दीलवर कुंवर है कहां।
मुझे ले चलो ऊसका घर है जहां॥
ईह सुन ईयार नें फीर दीलासा दीया।
कुंवर की तरफ से भरोसा दीया॥
खबर पूछी सब ऊलफती चाहकी।
हकीकत कलानें सुनी राहकी॥
कुंवर की जो सारी कहानी सुनी।
अंगुठी नीशानी को दी हाथ की॥
कलाने कहा जा कुंवर से कहो।
के एक रात तूम और भी दूख सहो॥
में देखूंगी कल आके तेरा जमाल।
तूझे देख हो जाऊंगी में नीहाल॥

पर अंगुली में ईह जह अंगुठी रखे ।
तू उस हाथ पर बनके तोता रहे ॥
गुजर जाय लेलो ओर हो जब निहार ।
तो आजंगी में दान में लेके हार ॥
कुंवर को अंगुठी से पहचान कर ।
उसी को में ईह हार दूं आनकर ॥
कुंवर को जहां लाई थी सुबेहदम् ।
ईह कहणां के जहां आप कीजे करम ॥
ईह अहवाल सुनकर जह तोता बना ।
दो पट्टे को लेकर जहांसे उड़ा ॥
कीया दूर वालुंसे जब जह मुवाफ ।
तो फीर आदमी हो गया जाके साफ ॥
कलाकी हकीकत कुंवर से कही ।
नीशांनी देई उसको अंगुश् तरी ॥
कुंवर को खूशी हो गई बे शूमार ।
हुवे शाद जीतने के थे उसके ईयार ॥
सभी मीलके खूश हाल एसे हुए ।
के शादीसे आंसु जन्हूको बहे ॥

फरुख का था रोना न था कुछ गजब।
जो हों मरग शादी तो क्या है अजब॥
सुना जब कुंवर ने ईह को लो करार।
तो पाया करार और हसा वार वार॥

लीखूं अब ईहांसि सुखन पूरवहार।
कुंवरकी कलाकाम देतीहै हार॥

उठा सुवेह दम खावसे काम राज।
कलाकाम के दूखसे गम गीं मीजाज॥
कीया हुकम सारे जलुदार जांय।
कुंवर जीतने आए हें सबको सुनाय॥
के हाजर सभी हुऐ आकर जहां।
कीया है जो हमनें मुकरर मकां॥
वीदेसी कुंवर सुनके वस् ईह खवर।
जवा हेर पहन कर बनें जूंकमर॥
पहन खीलयते ताम्र कोई गया।
हरीर और देवा कीसीनें लीया॥

कुंवर सब कलाकाम की ध्यान में ।
चले आए सारे उस मे दान में ॥
खड़े सब हुए आ महल को कीनार ।
हुई हर तरह आदमी से वहार ॥
जरीं वादले में जो थे सव भरे ।
खड़े जाके उस जायपर उह हुवे ॥
कुंवर नेभी फीर अपना सामां कीया ।
भवूत अपने तन पे सरासर मला ॥
उह तोता भी उसनें रखा हाथपर ।
लीये यार जोगी सभी साथ कर ॥
अंगुठी नीशांनी जो रांणीकी थी ।
तो अंगुली मे रखी चमकती हुई ॥
सीतावी उहांसे रवाना हुऐ ।
जहां जमें सव थे और ईह भी गऐ ॥
दोशाले कोई उड़े थे कोई शाल ।
गऐ ईह भी उस जा पे गुदड़ी के लाल ॥
उन्हे देखकर लोग सारे हंसे ।
कि ईह जोगी आए हें ईहां कीस लीये ॥

कलाका गरज सबको था इनतजार ।
के देखें कोसो आके देतीहै हार ॥
कलानें सवारी का सामान कर ।
मंगा गंगाजल और अशनान कर ॥
बदन में पहन सुरख जोड़ा नया ।
किही खूने अस्साक का खूंवहा ॥
लिवास और पोशाक को जह बाहार ।
जवाहिर लगी जोस में थी बेशूमार ॥
जो देखे कोई उसको सोरको फूलेल ।
पड़े आतशि ईशक् मैं उसको तेल ॥
मलाउसने कपड़ूं को इत्रे गुलाव ।
के सब इत्र में थी उहो. इनत खाव ॥
हिनासे हुवा दस्ती पाका जह रंग ।
के याकूत भी जोसको ही देख दंग ॥
जह वालुं को मुतीसे उसने भरा ।
नही फरक ईस में सोरे मुजोरा ॥
दो जुलफें वनां सुरते मा जवु ।
रखा ईश्कका पेच हर मु बमु ॥

चीवापान मुहको कीया लाल लाल ।
मीसी जी मलो तो हुवा और हाल ॥
उह गहना उजेवर अजब हुसन दार ।
उह मछली को वालु की थी एक वाहार ॥
गरज था हर एक वात में वांग पन ।
वनी ईस तरह जेसे होय दुलहन ॥
लीया हार नो लखा जी हाथ में ।
खवासें अभी फीर चलीं साथ में ॥
हुई दस्के चण्डोल में जह सवार ।
खवासूं की थी साथ उसकी कतार ॥
खूशी करके अपने महलसें गई ।
जहां परके जह मुज तमा थे सभी ॥
खड़े रांजवंसी सभी ईनत्जार ।
एका एक जो देखी बालाकी वहार ॥
हुए वे खवर सव कुंवर देखकर ।
गीरे कीतने वे होष्य हो खाक पर ॥
कोई जुल्फ के दाम में जा फसां ।
कोई वोला कालीनें मुजकोडसा ॥

उलेकीन नजर सबकी रांणी पे थी।
नई हुस्न पर और जवानी पे थी ॥
वोदेसी कुंवर मुनत् जब सब खड़े।
कहिं हार कीसके गले जा पड़े ॥
न था ध्यान जनको कीसी बात पर।
तकें सब कलाकाम के हाथ पर ॥
कलानें कुंवर काम को ध्यान कर।
जह ईयार और अंगुठी को पहचान कर ॥
उह आई कुंवर कामके रूबरू।
कला और कुंवर फीर हुए दू बदू ॥
कलाकाम नें हाथ में हार ले।
दीया हार अपना कुंवरके गले ॥
कला हार देकर महलको चली।
उहां सारे सफमें पड़ी खल बली ॥
अतीतों को रांणी नें हार अब दीया।
एही देख सबनें अचम्बा कीया ॥
महाराज को ईह खबर जाके दी।
के रांणी अती तीं के फन्दें पड़ी ॥

महाराजनें सुनके गमगीन हो ।
कहा हार जाकर अभी छीन लो ॥
और उस हार को भेजदेवो महल ।
कालाको कहो लेके फीर आवे कल ॥
लीया छीन जाकर अतीतोंसे हार ।
और एक दो घड़ीतक पड़ो उन पे मार ॥
महाराज नें हुकम ईयौं फीर दीया ।
के सब राजूं की ईह सुखन दो सुना ॥
के जह आज सब जा मकां में रहें ।
सहर फीर उसी जा पें मज लस करें ॥
कहा सबनें रांणी की ईह क्या कीया ।
अतीतों को क्यौं हार तूनें दीया ॥
कहा रीके रांणीनें वस् पुर होजाव ।
दीया था कोसीको लीया जह शोताव ॥
गरज उस पे जादू उन्हू का चला ।
जोधर हार फेंका उन ही को मीला ॥
गजब और ईह सुन हुवा काम राज ।
कहा उन अतीतों का हे ईह ईलाज ॥

के कोड़ू को जाकर उन्हें मार दो ।
औ ईस् शहर से उनको वाहर करो ॥
कुंवर और ईयार उसके वस् मारखा ।
गोरे होके वे होश गश् आगया ।
नोकाला फीर उनको वहत मारके ।
गए शवको उह मठमें हर दूवार के ॥
न खाना न पाणी न सब री करार ।
वहत मोलके रोए कुंवर और ईयार ॥
गई रात् और रोज़ रखशां हुवा ।
उही पहले दीन का सा सामां हुवा ॥
गए पहले दीन से भी मुरदम जयाद ।
कोई जोमें गमगीं कोई जोमें शाद ॥
उह जोगो भी पहुचे उसी वात में ।
अंगुठो कलाको रखी हाथ में ॥
रहा पास तोता चले ईयार सव ।
कहा देखें कोसको मौले हार अव ॥
कुंवर था कलाकामके ध्यान में ।
खड़ा हो गया जाके में दान में ॥

नकी वींने भेजी कलाकी खबर ।
के सब लोग हाजर हुवे आनकर ।।
जह बन ठनके आई ईसी तौर से ।
हर एक को लगी देखनें गौर से ।।
सवारी थी जस दीन हवादार को ।
वहार एक थी हाथ में हार को ।।
जवस थी जह दौलदार को ध्यान में ।
जो देखाके दौलवर हैं मे दान में ।।
कलानें दीखाई कुंवर को वहार ।
गले में दीया जसके खूब होके हार ।।
जहांसे फीर अपने महल में गई ।
लगी शोर फरीयाद करनें सभी ।।
कोई बोला रांणी हुई वस्के मस्त् ।
कोसीने कहाहै जह जोगी परस्त ।।
कोई बोला जसको नही है खता ।
फकीरोंने कुछ जस पे जादू कीया ।।
लीया छीन कोतवाल ने जस्से हार ।
पड़ो जन् बीचारूं पे कोड़ूं की मार ।।

उह फ़ीर बान्ध मुसकें उन्हें ले चला ।
महाराज के पास ईयों जा कहा ॥
ईह साहर बड़ा चोर है काफ़र कबीर ।
बहत अपनें काबू में रखता है पोर ॥
फ़रेबी दग़ाबाज़ मक्कार है ।
हर एक ईयार भी उसका अईयार है ॥
कला हार दे जोस कुंवरके गले ।
तो उड़कर जहां से जसीको मीले ॥
महाराज ईह सुन के बर हम हुवा ।
गजबका सा चहरे पेचाखस हुवा ॥
कहा फ़ीर तोम से अब बनीसबत करो ।
जवां जो के आए हैं रूखसत करो ॥
जहांतकके राजाथे परदेश के ।
महाराज से सब उह रूखसत हुवे ॥
कहा फ़ीर अतीतों को अब दारदो ।
एही बस् सजाए गुनेह गार हो ॥
गरज बान्धकर जो उन्हें ले गए ।
खड़े सब हुए जाके सूली तले ॥

गया शहर में वस् ईह शहरा तमाम ।
हुवा खलकका आके जहां अजदहाम ॥
जो अरकान दौलत थे राजाके पास् ।
उन्हूने कीया ईसतरह अलतमास् ॥
जो है खून नाहक् का अञ्जाम वद ।
तो होवेगा सरकार का नाम वद ॥
मुना सब ईह हैं कैद ईनको रखे ।
फकीरोंका खूं अपनी गरदन न लें ॥
सुनो जबकि राजानें पन्दे नो को ।
तो बोला करो कैद सूली नदो ॥
ईन्हे जाके अन्धे कुंए में रखो ।
न खोलें कभी जहां जीवें या मरो ॥

चला चाह में अब कुंवर काम रूप ।
चला चाह में अब कुंवर काम रूप ॥

मुलाजम महा राजका हुकम ले ।
कुंए में उन्हे बन्द करणें चले ॥

कीया चाह तारीक में उन्को कैद ।
हुई मुन्कीता उन्को सारी उमेद ॥
उह पत्थर वड़ा उस्को मुहका जो था ।
लवे चाह पर उह उठाकर रखा ॥
पीयादे उन्हें वन्दकर घर चले ।
कुंवर और क्रय ईयार गम में फसे ॥
नीकल नें की हरगीज न उहां राह थी ।
कलाकाम की चाह में चाह थी ॥
कुंवर नें मीतर चंद से ईयौं कहा ।
ईसी चाह में हम रहे अव सदा ॥
न दीलवर मीला और न पहुचे वतन ।
करमका लीखा था ईह रञ्जो महन ॥
न होता कुए पर ईह पत्थर अगर ।
तो उड़ जाते हम वनके तोता मगर ॥
जले अव कुंए में हे पत्थर तले ।
कलाको खवर कीस तरह से मीले ।
मीतर वोला गो हर तरह आस है ।
मगरवाल उस् देवका पास् है ॥

कोसी ढब मोलि आग ईस् जा अगर ।
तो जहवाल जलने से लेवे खवर ॥
थोतर बोला है मेरे पास एक छूरी ।
और ईस् जापे है संग रेजो सभो ॥
कोसी संगपर मारी ये एकबार ।
तो आग जल्दी हो जायगो आग्राकर ॥
कलांवत ईह बोला के पेदा हो आग ।
अगर सो जसे गाऊं दीपकका राग ॥
कुंवर बोला दीलवर को में ईयाद कर ।
भरू आह ताला तो नोकले शरर ॥
गरज सो तरह पर जो ततवोर को ।
कोसी नो जहां आग पेदा हुई ॥
भोतर चंद नें वाल लाकर शोताव ।
जसो आगपर जसको दो खूब ताव ॥
कोया आगनें वाल में जो अग्रर ।
हुई देवको दील को भी फोर खवर ॥
लगा कहनें ईयों दील में जह सूजमन्द ।
भोतर चंद है रञ्ज और गम में बन्द ॥

अलम से नीकालु में उस ईयार को।
रखूं साद्क अब कोलो ईकरार को ।।
उड़ा और एक पलमें तैको जह राह ।
फीर उस जाय पहुचा जहां था जह चाह ।।
सरे चाह से संग उसने उठा ।
जो फेंका तो दरीयाके अन्दर गीरा ।।
कुंए में उतर देवने ध्यान कर ।
मीतरचंद की सबमें पहचान कर ।।
कहा ईयारकोस बातको चाह है ।
कहो मुझसे कीया तूं मदत खाह है ।।
मीतर नें कीया पहले उसको सेलाम ।
कहा उस्से फीर हाल अपना तमाम ।।
के हमको कीया ईहां के राजा नें कैद ।
सो अब मुख लसी को है तूझसे उमैद ।।
जो अशफाक को रहसे आया ईधर ।
कुंएसे नीकालनें को कुछ फीकर कर ।।
कहा देवने जाव तूम जीस मकां ।
तो पहचांदूं तुम को उड़ाकर जहां ।।

मोतर बोला तूम काम ईतना करो ।
कहीं दूर ले जा हमें छोड़ दो ॥

खूशी का ईहां से लीखू अह तमाम ।
कुंऐं से नीकखते है केदी तमाम ॥

लीया हाथपर उसने सबको वेठा ।
फीर उस्चाह तारीक से उह उड़ा ॥
दीया छोड़ एकजाय पर वे खलल् ।
कीसी और राजाका था जहां अमल ॥
फीर उन सबसे उह देव रूखसुत हुवा ।
कुंवर लेके ईयारौं को जहांसे चला ॥
नहा धोके रस्ते में उह सात ईयार ।
कीसी शहर में फीर गए एक वार ॥
लीवासे फकोरी उतारा जहां ।
लीया एक रहनें को पूखते मकां ॥
कुंवर नें उसी जा पे लोहा मगां ।
लगाया उह पत्थर तो सोना हुवा ॥

कीया पहले सामां जरूरी दूरस्त ।
मुलाज़म कई रखे चाल की चुस्त ॥
हुवा रफता रफता हर एक काम खूब ।
बनाया सब अपना सरनजाम खूब ॥
गरज लेके हमराह फौजो सीपाह ।
चला उहांसे जोसतरहें जाते है शाह ।
कलाकाम को दील में जो चाह थी ।
सरण दीपकी उसनें फीर राह ली ॥
चला जाता जबतक की होती न शाम ।
सेवा एक शब की न करता मुकाम ।।
उह सरदार उदेपूर के जोतने थे ।
कि रहनें जुदा थे कुंवर से हुवे ॥
सो फीर ते थे उह खसता दील जा बजा ।
कुंवर कामका पूछ ते थे पता ॥
मीले ना वहां उह कुंवर काम से ।
कुंबर नें रखा उनको आराम से ॥
हुवा शाद हर एक मनजील में दील ।
गया फीर सरण दीपके मुत्तसील ॥

एका ऐक उसी शहरकी सामने ।
बजाया न कारा कुंवर काम नें ॥
महाराज समझाके आया गनीम ।
बुलाए सब उसने नदी भी हकीम ॥
कहा ले खबर जा कोई फौज से ।
के ईह कौन आया है ईस् औजसे ॥
सभुं ने कहा ईयौं के देवान जाय ।
तो फीर जह मुफसल खबर उनकी लावें ॥
के है कौन और कोयौं जह आया ईहां ।
करे उससे दरीयाफ्त नामो नीशां ॥
जह देवान खबर पूछनें जो चला ।
तो वह फौजी लशकर में दाखल हुवा ॥
कोसीने कुंवर कामसे जा कहा ।
के आया है देवान सरण दीपका ॥
दीया हुकम उसने के लावो ईहां ।
भला देख करताहे वह क्या बयां ॥
कुंवर ने दीया हुकम जब आशकार ।
चोला लाया जाकर उसे चोपदार ॥

खड़ें होके देवांनें मुजरा कीया।
अदव से फोर अहवाल पुरसां हुवा॥
कुंवर वोला में हुं उह जोगी फकोर।
के जीसपर कीये जुलम तूंमने कसीर॥
दीये तुमने क्या क्या न हमको गजन्द।
कीया चाक तारीक में लाके वन्द॥
उसी में नही कुछ तूम्हारी खता।
करम में हमारी एही था लीखा॥
कुंवर से उह देवान ईह हाल सुन।
लगा कहनें फोर ईसतरह पर सुखन॥
केहे नाम क्या और कहां हे मकां।
मफसल सव अहवाल कीजे वयां॥
कुंवर काम सुन ईह सुखन चुप रहा।
मीतर चंदनें हाल सारा कहा॥
उह मां वापको भी हकीकत कही।
सुनाई उसे ग्रान सोवात सभी॥
वयां कीजो कुछ खावको थी उह वात।
गरज सव सुनाई उसे वार दात॥

कहा फीर गया था सुमत वीराह मन।
जीरा उस्से भी पूछ ले वो सुखन ॥
कलाकी महवत ने ईह दुख दीया।
की राजाको ईस तौर जोगी कीया ॥
कुंवर बोला गो सब हुवा दूख मुझे।
कलाको जो पाउं तो हो सुख मुझे ॥
मुझे काम जरसे न कुछ राज से।
एही अरज करणा महाराज से ॥
सीधारो महाराज के पास जाव।
कुंवरका ईह अहवाल सारा सुनाव ॥
ईह सब सुनके देवान रूखसत हुवा।
कहा जा महाराज से माजरा ॥
की राजा उदेपूर का है कुंवर।
कहा और अहवाल भी सरव सर ॥
ईह सुन राजाने सब पण्डीत वुलाय।
कलाका जनम पतरह भी उह लाय ॥
जनम पतरको देखकर ईयौं कहा।
की राणीका दूलहा एही है लीखा ॥

महाराज ईयौं वोले देवान को ।
के सामांन शादी महीया करो ॥
महल एक वड़ा फीर तो खाली हुवा ।
कुंवर को वीला कर उसी में रखा ॥

करू शादीका अब कुंवरकी वयां ।
की दूला दूलहीन दोनुं मीलते हे ईहां ॥

कुंवर कामको फीर ईह भेजा पयाम ।
के शादीका तुम भी करो अह तमाम ॥
लीखे नामा राजुं को हर एक जा ।
हर एक राजा शादी के शामल हुवा ॥
मुवारक सीलामत कहा शाद शाद ।
कुंवरकी खूशी थी हर एक दम जयाद ॥
उह हातूं में कंगना भी वान्धागया ।
और एक नेक दीन भी मुकरर हुवा ॥
महाराज वोले ईह देवान से ।
न गाफल कुंवर के ही सा मांनसे ॥

ईह सरदार जहां जाके हाजर रहें ।
जो दरकार हो सब महीया करें ॥
जो शादीकी दोनुं तरफ थी जह धूम ।
तो दोनुं तरफ खलकका था हजूम ॥
खड़े जा बजा शामीयानें हुवे ।
खूशी से जहां शादीयानें बजे ॥
हुई मजलस आरास्ता हर तरफ ।
कीया ऐश और गम हुवा बरतरफ ॥
जह नावत व नोवत नकोरे बजाय ।
समारागका आसमां पर जड़ांय ॥
जह रकास मुतरब तीयाईफ तमाम ।
हुई नोच और रागकी धूम धाम ॥
अजब साचक और महन्दी की थी वहार ।
के हर चो जसे ऐश था आशकार ॥
उबटना मलें मोलके सब मर दो जन ।
खूशीकी सेवा कुछ न था जहां सुखन ॥
गरज जबके आया जह शादीका दीन ।
कुंवर तब लीवासे शहाना पहन ॥

लगी कहनें तईयार हो अब बरात।
करें ईद से दीन की हम अब बरात॥
उह मोतीका सेहरा जो बान्धा गया।
सीतारूं मे एकचांद गोया छीपा॥
कुंवरके तरफ थी ईधर धूम धाम।
उधर उह महाराजका अह तमाम॥
महल में अजब तरहकी थी वहार।
उह छोटें बड़ूंकी बनावो सौगांर॥
हुई हर सुहागन खवासुं को साथ।
उठाया कलाकाम को हाती हाथ॥
गई लेके जोसदम उह हमाम में।
तो कोसा फोर आया सब अन्दाम में॥
जो खुशबु लगा सोरके गोन्दी उह बाल।
खुला फोर तो एक उसका हुसनो जमाल॥
उह अंगोया उह पेश वाज़ उह ओड़नो।
खुशो से पहन कर उह दूलहन् बनो॥
उह जेवरको थी सरबे पातक वहार।
गरज सब कोये उसका सोला सींगार॥

ईह दोनु तरफ जवके सा मां हुवा ।
कुंवरकाम फीर तो वीहानिक चड़ा ॥
जवाहिर के हो दो में होकर सवार ।
चला ग्रहरको सव दीखाता वहार ।
उह महतावी हत फुल और फूलझरी ।
अनार और हवाई छुटी हर घड़ी ॥
चलारात को जवकि ले उह वरात ।
हुवा दीन उजाले सेथी उह जोरात ॥
कीयाथा जो आरास्ता एक मकां ।
सो दूलाको लेकर गए सव उहां ॥
दीया सवको उह ग्ररवतो पान दान ।
तरोताज़ह हो जोसे जोसम और जान ॥
रही दो पहर तक उहां खूव धूम ।
कीये जीतने होते हैं रस मीरसुम ॥
ईहांतक तो ग्रादीका सामां हुवा ।
के उह ग्रहर सारा परस्तां हुवा ॥
जह हत लेवा दूलहा दूलहीन का वन्धा ।
जो पड़ना था सव पंडीतों ने पड़ा ॥

फीर अन्दर महल में जह नौशा गया ।
मुवारक सिलामत हर एक नें कहा ।।
वठाया था दूलाको लाकर जहां ।
दूल हीन को भी फीर ला वठाया जहां ॥
न था नाच और राग का कुछ शुमार ।
भरीं थीं फकत डोमनी एक हजार ।।
लगीं सीटीयां दे (जव वर मला
पड़ी एक हसी और उड़ा क्ह कहा ॥
सुहागन हर एक आके वेठीं जहां ।
दीये पड़के दूलाको मीसरी उपान ॥
हुऐ टींटके और टोने वहत ।
कीये रसम अपनी सभुनें वहत ।।
कलाकी तरफ देखता था कुंवर ।
जह घुंघट से करती थी छीपकर नजर ।।
एही वात उह दोनुं दील में करें ।
कीसी तौर जलदी से वाहम मीलें ।।
गरज जव रसुमुं से फारग हुवा ।
तो दूदूला ल हीन को उठा ले चला ॥

दहेज उसको राजानें ईतना दीया ।
के एसा न देखा न हरगीज सुना ॥
बराती चले साथ करते वहार ।
खबरदार कहते चले चोप दार ॥
गया लेके अपने महलमें शीताब ।
सोले फीर तो दोनु महो आफताब ॥
जो की उसने खोलवत हुवे सब जुदा ।
कुंवर और कला बस् रहे एक जा ॥
छपर खट में होकर हम आगोश उह ।
लगे वसल में खोने फीर होश उह ॥
जो मकसद तक उसकी रसाई हुई ।
बहत देरतक हाय पाई हुई ॥
कही अपनो दोनुंने फीर वार दात् ।
कटी उनकी फीर ऐश अशरत में रात ॥
प्रभुनें दीया ईश्के में क्या असर ।
की उलफत में हे दीलको दील से खबर ॥
कहां उह कुंवर और कहां उह कला ।
दीया जुजब उलफत में उनको मीला ॥

कुंवरको तरह जीसनें महनत करी।
उठाईती आखर की राहत मीली॥
कुंवर खूश हुवा मील कलाकाम से।
महलमें लगा रहने आराम से॥
खूशीका फीर एक और सामाकीया।
अमीरूं को बुलवाके महमां कीया॥
मीतरचंद जो उस्से रखता थाचाह।
लता काम से फीर कीया उसका वीआह॥
लगा लूटनें वसल की जह वहार।
हुई शाद शादी में सब उसके यार॥
रहा जहां कुंवर चैन से एक साल।
न लाया कभी गमका हरगीज खयाल॥
फीर आया जो मां बापका ध्यान कुछ।
तो होनें लगा गमका सामान कुछ॥
कलासे कीया राज दील सब बयान।
कि है दील में अब जांय अपनें मकान॥
अगर दोस्तीका तूम्हें पास हो।
तो मेरे वतन तूम भी हमराह चलो॥

कहा उसने ईह काम है क्या वड़ा।
तुम्हारी रीजा भीहे मेरी रीजा॥
महाराज से ईह हकोकत कहो।
ईजाजत गरज हर तरह उसने ली॥
जो राजा ने दोहुं को रूखसत कीया।
सरञ्जाम सारा सफरका दीया॥

खीखूं आखरी और ईह दास्तान।
खूशीसे कुंवर जाय अपनी मकां॥

हुवा था जूदा जीस घड़ीसे कुंवर।
उसी दीन से रोते थे मादर पीदर॥
कुंवर काम कह याद करते सदा।
न पाते कीसी काम में उह मजा॥
कुंवर कह पूकारा करें वार वार।
सदा घर में रोया करे जार जार॥
तजसुस उन्हूनें वहत सा कीया।
मीलापर कुंवरका न हरगीज पता॥

कलाकी सरण द्वीपसे ले कुंवर।
चला जवतो हर रोज करता सफर ॥
बहुत साथ थे उसके फोजी सीपाह।
खुशी से उह जाताथा शामो पगाह ॥
गया मुतसल जो उदैपूर के।
तो उस शहरके लोग तरसां हुवे ॥
खबरदार नें राज पतसे कहा।
के सरपर गनीम अवतो एक आगया ॥
रई सोंनें जोसदम सुनीं ईह खबर।
तो खूरदो कलांको हुवा वसके डर ॥
ईह राजा नें दीवान से फोर कहा।
के तू जलदजा और खबर उनकी ला ॥
चला जब करमचंद ईहै करके ध्यान।
तो पहुचा उह उफोजके दर मीयान ॥
जो दरीयाफतको जा कोमोसे खबर।
कहा उसनें आया है राजा कुंवर ॥
सरण द्वीप जाकर सरण जामसे।
कीया बी याह अपना कलाकाम से ॥
कुंवर की गरज देख पहचान कर।
कीया राजपत से बयां आनकर ॥